

Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

| | | | |
|--------------|----------|--------------------|----------|
| Work: | W1CZ2481 | ImageGroup: | I1CZ2491 |
| LCCN: | 97913962 | ISBN: | n/a |

| | |
|------------------------------|---|
| Title: | མདོ་རྒྱུད་ལས་འབྱུང་བའི་གཟུངས་སྒྲགས་འགའ་ཞིག་བོད་སྐད་དུ་བསྐོས་བ་དང་བཅས་པ། mdo rgyud las 'byung ba'i gzungs sngags 'ga' zhig bod skad du bkrol ba dang bcas pa |
| Author: | n/a |
| Descriptor: | n/a |
| Original Publication: | Durlabha Bauddha granthamala; 16;n/a |
| Place: | Saranatha, Varnasi |
| Publisher: | Durlabha Bauddha Grantha S?odha Yojana?, Kendri?ya Ucca Tibbati?-S?iksha?-Sam?stha?na |
| Date: | 1997 |
| Volume: | 1 |
| Total Volumes: | 1 |
| TBRC Pages: | 2 |
| Introductory Pages: | n/a |
| Text Pages: | n/a |
| Scanning Information: | Scanned at M/S Satluj Infotech Images, E-45, Sector 27 Noida, District Gautam Buddha Nagar, U.P. 201301 via New Delhi, IN for the Tibetan Buddhist Resource Center, 150 17th st., New York, NY 10011, U.S.A 2006. Comments: from 02. #2 (0000 drive) on Dummy 24. |

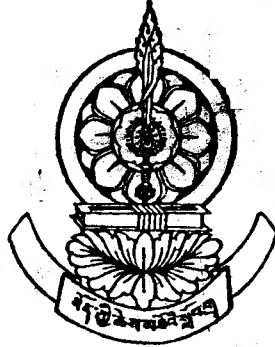
दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला- १६

བཅུན་པ་དབང་པོས་ཤུགས་བསྐྱེགས་མཛད་པའི་
མདོ་རྒྱུད་ལས་འཕུང་བའི་གཟུངས་སྒྲགས་འགྲའ་ཞིག་
པོད་སྐད་དུ་བསྐྱོལ་བ་དང་བཅས་པ་བཞུགས་སོ།།

भदन्त-इन्द्रेण संकलिताः

सूत्र-तन्त्रोद्भवाः कतिपयधारणीमन्त्रा

भोटानुवादसहिताः



भोट विद्या संस्थानम्

लिप्यन्तरकर्ता सम्पादकश्च

ठिनलेराम शाशनी

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५४१

ख्रीस्ताब्द १९९७

विषय-सूची

| | |
|------------------------------------|----------|
| प्रकाशकीय वक्तव्य (हिन्दी) | v |
| प्रकाशकीय वक्तव्य (अंग्रेजी) | vi |
| प्रकाशकीय वक्तव्य (तिब्बती) | vii-viii |
| प्राक्कथन | ix-xiv |
| विषय-सूची | xv-xviii |
| धारणीमन्त्रसंग्रह | १-९४ |
| (१) मंगलाचरण | १ |
| (२) नामसंगीतिमन्त्र | २-३ |
| (३) चक्रसंवरमन्त्र | ४-७ |
| (४) हेवज्रमन्त्र | ७-९ |
| (५) आर्य-अमोघपाशधारणी | ९-२९ |
| (६) एकादशाननधारणी | २९-३० |
| (७) शीलविशुद्धिधारणी | ३० |
| (८) उष्णीषविजयाधारणी | ३१-३७ |
| (९) उष्णीषविमलधारणी | ३७-४२ |
| (१०) विमललघुधारणी | ४२-४३ |
| (११) गुह्यधातुधारणी | ४३-४६ |
| (१२) बोधिगर्भालङ्कारलक्षधारणी | ४६-४८ |
| (१३) मूलमन्त्र | ४८ |
| (१४) प्रतीत्यसमुत्पादहृदयमन्त्र | ४८-४९ |
| (१५) अपरिमितायुर्ज्ञानवृहद्धारणी | ४९-५० |
| (१६) अपरिमितायुर्ज्ञानलघुधारणी | ५० |
| (१७) दुर्गतिपरिशोधनमूलविद्यामन्त्र | ५०-५१ |
| (१८) अक्षोभ्यधारणी | ५१ |
| (१९) तथागतशताक्षर | ५२ |

| | |
|--|-------|
| (२०) वज्रसत्त्वशताक्षर | ५२-५३ |
| (२१) हेरुकशताक्षर | ५४-५५ |
| (२२) पूजामेघधारणी | ५६ |
| (२३) स्तूपपरिक्रमाधारणी | ५७ |
| (२४) दक्षिणापरिशोधनीधारणी | ५७-५८ |
| (२५) मुनीन्द्रहृदयमन्त्र | ५८ |
| (२६) अवलोकितेश्वरहृदयमन्त्र | ५८ |
| (२७) मञ्जुश्रीहृदयमन्त्र | ५९ |
| (२८) वज्रपाणिहृदयमन्त्र | ५९ |
| (२९) मञ्जुश्री-अरपचनधारणीमन्त्र | ५९ |
| (३०) अचलहृदयमन्त्र | ५९ |
| (३१) ताराधारणी | ६० |
| (३२) मारीचीधारणी | ६० |
| (३३) प्रतिसराधारणी | ६० |
| (३४) पद्मोष्णीषधारणी | ६० |
| (३५) वैश्रवणधारणी | ६१ |
| (३६) आर्यशतसाहस्रिकामन्त्र | ६१-६२ |
| (३७) पञ्चविंशतिसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्र | ६२-६३ |
| (३८) अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्र | ६३-६४ |
| (३९) प्रज्ञापारमिताहृदयमन्त्र | ६४ |
| (४०) षट्पारमिताहृदयधारणी | ६४-६५ |
| (४१) मैत्रेयप्रतिज्ञाधारणी | ६५-६६ |
| (४२) विघ्नविनायकविद्यामन्त्र | ६६ |
| (४३) मारत्रासकरीमन्त्र | ६६ |
| (४४) बन्धमोचनीमन्त्र | ६७ |
| (४५) अवतंसकधारिकामन्त्र | ६७ |
| (४६) समाधिराजसूत्रमन्त्र | ६८ |

| | |
|---|-------|
| (४७) प्रज्ञोत्पन्नामन्त्र | ६८ |
| (४८) सहस्रवर्तिमन्त्र | ६८-६९ |
| (४९) वन्दनामन्त्र | ६९ |
| (५०) सर्वपापशमनीमन्त्र | ७० |
| (५१) त्रिरत्नाश्रयप्रदक्षिणामन्त्र | ७० |
| (५२) वचनप्रभावकरीमन्त्र | ७१ |
| (५३) सर्वदुर्गतिपरिशोधनमन्त्र | ७१ |
| (५४) भैषज्यदाने भैषज्याभिमन्त्रणमन्त्र | ७१ |
| (५५) सर्वव्याधिप्रशमनीमन्त्र | ७२ |
| (५६) अपरिमितगुणानुशंसामन्त्र | ७२-७३ |
| (५७) (पूर्वासंगृहीत) धर्मचर्याप्रकाशकमन्त्र | ७३-७४ |
| (५८) कायस्नानमन्त्र | ७४ |
| (५९) जलदानमन्त्र | ७४ |
| (६०) पीतजम्भलमन्त्र | ७५ |
| (६१) कृष्णजम्भलजलदानमन्त्र | ७५-७६ |
| (६२) अमृतकुण्डलीमन्त्र | ७६ |
| (६३) अशुद्धशोधनमन्त्र | ७६ |
| (६४) अचलवलिमन्त्र | ७६ |
| (६५) तारावल्यर्पणमन्त्र | ७७ |
| (६६) नागवलिमन्त्र | ७७-७९ |
| (६७) सूरूपमन्त्र | ७९-८० |
| (६८) अग्रपूजार्पणमन्त्र | ८० |
| (६९) पिण्डमन्त्र | ८१ |
| (७०) शोधनधर्मताविशुद्धिमन्त्र | ८१ |
| (७१) संवर्द्धनगगनगञ्जमन्त्र | ८२ |
| (७२) अमृतकुण्डलीमन्त्र | ८२ |
| (७३) चर्याविशितावेगवदंशुमन्त्र | ८२-८३ |

| | |
|---------------------------------------|-------|
| (७४) ज्ञानोल्कामन्त्र | ८३ |
| (७५) वशिताचक्रमन्त्र | ८३ |
| (७६) (पुनः आम्नायान्तरेण) जलवलिमन्त्र | ८४ |
| (७७) नागवलिमन्त्र | ८४ |
| (७८) मारीचीदेवीमन्त्र | ८४ |
| (७९) दशदिक्पालमन्त्र | ८५-८६ |
| (८०) अष्टसेनमन्त्र | ८७ |
| (८१) भूतवलिमन्त्र | ८७ |
| (८२) छ छ [सञ्चक] धारणीमन्त्र | ८८-९३ |
| (८३) महाकालमन्त्र | ९३-९४ |
| (८४) देवी(महाकाली)मन्त्र | ९४ |
| (८५) परिणामनाशलोक | ९४ |

ॐ॥ ཨོྫ་ནམ་གྲུ་རྒྱལ་བུ་ཡེ།

ॐ नमो भट्टारकबुद्धाय ।

ཧི་བཅུན་སངས་རྒྱལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ནམ་གྲུ་ཡེ།

ནམ་ཨོྫ་སྒྲུ་ཡེ།

नमस्सद्धमाय ।

नम आर्यसङ्घाय ।

དམ་པའི་ཆོས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། ། འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

བུཌླ་ཏྲེ་ལྷ་ཀྱ་རྒྱུ་སུར་ན་ར་ནམ་ཏྲེ་སྤར་སྤར་ཏྲེ་རྒྱུ།

बुद्धं त्रैलोक्यनाथं सुरनरनमितं पारसंसारतीर्णं

སངས་རྒྱལ་འཇིག་རྟེན་གསུམ་མགོན་འཁོར་བའི་ཐར་སོན་ལྷ་དང་མི་ཡིས་བདུད་གུར་ཅིང་། །

དྲི་རྒྱུ་[དྲི་རྒྱུ་]གྲི་རྒྱུ་རབ་རྒྱུ་སྒྲུ་ལྷ་ཀྱ་རྒྱུ་ཏྲེ་རྒྱུ་རྒྱུ་ཏྲེ་རྒྱུ།

तीर्थं (धीरं) गंभीरवन्तं सकलगुणनिधिं धर्मराज्याभिषिक्तम् ।

བརྟན་ཞིང་ཟབ་པ་དང་ལྷན་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོར་དབང་ཐོབ་ཡོན་ཏན་ཀྱན་གྱི་གཏེར། །

དྲི་རྒྱུ་ལྷ་ཀྱ་རྒྱུ་[མྱ་རྒྱུ་]ཀྱ་རྒྱུ་[ཀྱ་རྒྱུ་]ཀྱ་རྒྱུ་ཏྲེ་རྒྱུ་ལྷ་ཀྱ་རྒྱུ་ཏྲེ་རྒྱུ།

तृष्णालोभान्ध(मोहान्त)कारं कुल(कलि)कलुषहरं कामलोभादिवर्ज्यं

སྤོང་དང་གཏི་མུག་མཐར་ཕྱིན་ཅོད་པའི་དྲི་མ་འཕྲོག་ཅིང་འདོད་ཆགས་སོགས་སྤངས་བའི། །

དྲི་བཅུ་ཀྱ་རྒྱུ་ཏྲེ་རྒྱུ་མི་ཏྲེ་ཤི་རྒྱུ་སྤར་ཀྱ་ལྷ་ཀྱ་རྒྱུ་ཏྲེ་རྒྱུ།

तं वन्दे शाक्यसिंहं प्रणमितशिरसा सर्वकालं नमामि ॥

ཀྱ་རྒྱུ་སིང་གེ་དེ་ལ་སྤྱི་ཐོས་རབ་དུ་བདུད་དེ་དུས་ཀྱན་བདག་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

[illegible]

མྱེང་ལ་གནས། །

ཡེ་ཤེས་སྒྲུབ་དག་སངས་རྒྱལ་ཏེ། །སངས་རྒྱལ་དུས་གསུམ་བཅུགས་རྣམས་ཀྱིའོ། །

རྩོམ་གྱི་སྐབས་དེ་ནས་ལྷན་དུ་བྲུག་པའི་གཞི། །ཤེས་རབ་ཡི་ཤེས་སྒྲུ་ཅན་དེ།

ཡེ་ཤེས་སྒྲུ་ཅན་གསུང་དབང་ཕྱུག །འཕྲོ་བ་སྒྲིན་བྱིད་ཁྱོད་ལ་འདུད། །

ཆོས་ཐམས་ཅད་དངོས་པོ་མེད་པ་རང་བཞིན་རྣམ་པར་དག་པའི་དོན།

1. प्रश्न - ख.
2. ५ - ना० सं०

ॐ वदेऽमर्त्यं श्रीः [शृणु] (चक्रसंवरमन्त्र)

ཨོྭ་ཨོྭ་སྒྲུབ་བཏེ་བྱེ་ལྟེ། མཉུ་ཀལྲུ་གྱི་སྒྱི་བྱེ།

ॐ नमो भगवते वीरेशाय । महाकल्पाग्निसन्निभाय ।

ཕུག་འཆལ་ལོ་བཙམ་ལྟན་འདས་དཔའ་བོའི་དབང་པོ་ལ། བསྐྱལ་པ་ཆེན་པོའི་མི་དང་
མཚུངས་པ་ལ།

ཁྲུ་མགུ་རྟོ་རྟུ་ཡ། ངོ་རྩུ་ཀ་རུ་ཡོ་ག་ལྷི་ཁ་ལྷུ་ཡ།

जटामकुटोत्कटाय । दंष्ट्राकरालोग्रभीषणमुखाय ।

རལ་པའི་ཙན་པན་བཅོངས་པ་ལ། མཆེ་བ་གཅིགས་པ་དྲག་པོ་འཛིགས་སུ་རུང་བའི་ཞལ་ལ།

[illegible]

सहस्रभुजभासुराय । परशुपाशोद्यतशूलखट्वाङ्गधारिणे ।

ཕུག་ལོད་ཟེར་སྒྲོང་ཕུག་འབར་བ་ལ། དཔལ་སྒྲོང་དང་ཞལ་ས་ལ་ཕུར་ཞིང་མདུང་དང་གླི་ཁང་འཛིན་པ་
ལ།

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

व्याघ्राजिनाम्बरधराय । महाधूम्रान्धकारवपुषाय ।

སྒྲུབ་གི་པགས་པའི་གཏམ་ཐབས་འདིན་པ་ལ། ཏུ་བ་དང་མུན་པ་ཆེན་པོ་ལྟ་བུའི་སྐྱེ་ཅན་ལ།

ཀར་ཀར། ཀུར་ཀུར། བུཌ་བུཌ།

कर कर । कुरु कुरु । बन्ध बन्ध ।

མཛད་མཛད། བརྗོད་བརྗོད། ཆིངས་ཆིངས།

ཕྱི་པོ་པོ།

ཨོྃ་བཟླ་ཀཱ་རི་ཉི་བཟླ་ཡ་རྩྱུ་རྩྱུ་རྩྱུ་ཡེ་ལྷ་རྩྱུ་॥

ॐ वज्रकर्तरी हेवज्राय हूं हूं हूं फट् स्वाहा ।

རྩི་ཨི་གྲི་གྲི། བཙུ་བ་[དབྱེས་པ་] རྩི་ཨི་ལ།

ཉི་བའི་སྒྲིང་པོའོ།

ཨོྃ་ཨྱུ་རྩྱུ་ཨོྃ་བཟླ་ཀྱི་རྩྱུ་ཨོྃ་ཡེ་ལྷ་རྩྱུ་॥

ॐ आः नं वज्रनैरात्म हूं फट् स्वाहा ।

རྩི་ཨི་བདག་མེད་མ།

ཡུམ་གྱི་མཚན་སྤྲེགས་སོ།

ཨོྃ་ཨྱུ་ཨོྃ་ཨོྃ་ཡེ་ལྷ་རྩྱུ་॥

ॐ आ अं हूं फट् स्वाहा ।

སྒྲིང་པོའོ། ॥

༺ 1 འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས། ।

(आर्य-अमोघपाशनामधारणी)

ནམ་སྒྲིལ་ལྷ་ཨུག་ཏ་པ་རྩི་རྩི་རྩི་སའ་བུ་རྩི་བོ་རྩི་སའི་བྱུ་

नमस्त्रैयध्व-अनुगतप्रतिष्ठितेभ्यः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः ।

དུས་གསུམ་དུ་གཤེགས་ཤིང་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་
ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།

ནམ་མཁའ་པ་རྩི་ལྷ་ཨུ་རྩྱུ་ཡེ་ལྷ་སྒྲིལ་ལྷ་ཨུ་རྩྱུ་ཨོྃ་ཨྱུ་ཨོྃ་ཨོྃ་ཡེ་ལྷ་རྩྱུ་

नमः प्रत्येकबुद्ध-आर्यश्रावकसङ्घेभ्यः । अतीत-अनागतप्रत्युत्पन्नेभ्यः ।

འདས་པ་དང་མ་བྱོན་པ་དང་ད་ལྟར་བྱང་བའི་རང་སངས་རྒྱས་དང་འཕགས་པ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་
དགེ་འདུན་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།

1. 'आर्यामोघपाशधारणी से वैश्रवणधारणीमन्त्र' (पृ० 9-61) तक महा-अनुवादक श लु (ཞ་ལུ་ལོ་རྩྱ་བ་
ཆེན་པོ) द्वारा संगृहीत हैं ।

ནམ་མཁུག་གཏུན། ནམ་མཁུག་ཕྱི་པར་ཏུ།

नमः सम्यग्गतानाम् । नमः सम्यक्प्रतिपन्नानाम् ।

ཡང་དག་པར་སོང་བ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །ཡང་དག་པར་ཞུགས་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་
འཆལ་ལོ། །

ནམ་མཁུག་ཤར་དུ་ཁྱེད་ཀྱི་ཕྱི་པར་ཏུ།

नमः शारद्वतीपुत्राय महामतये ।

སོ་སོས་ཆེན་པོ་ཤར་དུ་ཁྱེད་ཀྱི་ཕྱི་པར་ཏུ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ནམ་མཁུག་ཞུ་རྒྱུ་མེད་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། མཁུག་པོ་ཆེ་སྐྱེ་བུ།

नमः आर्यमैत्रेयप्रमुखेभ्यो महाबोधिसत्त्वेभ्यः ।

འཕགས་པ་བྱམས་པ་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ནམ་མཁུག་སྐྱེ་བུ་ཁྱེད་ཀྱི་ཕྱི་པར་ཏུ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། མཁུག་པོ་ཆེ་སྐྱེ་བུ།
སྐྱེ་བུ་ཁྱེད་ཀྱི་ཕྱི་པར་ཏུ།

नमः सुप्रतिष्ठितशैलेन्द्रराजप्रमुखेभ्यः सर्वतथागतेभ्योऽर्हद्भ्यः सम्यक्सम्बुद्धेभ्यो
भगवद्भ्यः ।

ལེགས་པར་རབ་གནས་རི་དབང་གི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དག་བཙུང་པ་
ཡང་དག་པར་ཐོགས་པའི་སངས་རྒྱུ་མཚན་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ནམ་མཁུག་སྐྱེ་བུ་ཁྱེད་ཀྱི་ཕྱི་པར་ཏུ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། མཁུག་པོ་ཆེ་སྐྱེ་བུ།

नमः सुवर्णवर्णसुप्रतिभासविनर्दितेश्वरराजाय तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསེར་གྱི་མདོག་ཅན་རབ་དུ་སྒྲང་བ་སྒྲ་དབྱངས་དབང་ཕྱག་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་
འཆལ་ལོ། །

དེ་བཞིན་གསེགས་པ་རྣམ་པར་གཟིགས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །དེ་བཞིན་གསེགས་པ་གཙུག་ཏྲ་
ཅན་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ནམ་མེད་པེ་བྱ་སྤྱི་ཏུ་སྐྱབས་ཏུ་ཡེ།

།ནམ་མེད་ཀླ་ཀླ་ཚུ་མེད་ཏུ་སྐྱབས་ཏུ་ཡེ།

नमो विश्वभुजे तथागताय ।

नमः क्रकुच्छन्दाय तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་སྐྱབས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལོག་པར་དད་
སེལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ནམ་མེད་ཀའ་ཀ་མུན་ཡེ་ཏུ་སྐྱབས་ཏུ་ཡེ།

།ནམ་མེད་ཀླ་ཕུ་ཡེ་ཏུ་སྐྱབས་ཏུ་ཡེ།

नमः कनकमुनये तथागताय ।

नमः काश्यपाय तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསེར་ཐུབ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་སྤངས་ལ་
ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

ནམ་མེད་ཤུག་མུན་ཡེ་ཏུ་སྐྱབས་ཏུ་ཡེ།

།ཞུ་ཏེ་སུ་ཀླ་སྤྱི་ཡེ།

नमः शाक्यमुनये तथागताय ।

अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་དབྱ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་ཚོགས་པའི་སངས་རྒྱུ་ཤུག་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་
འཆལ་ལོ། །

ཏུ་ཐུ།

ཨྀ་མུ་ནི་མུ་ནི་མུ་མུ་མུ་མུ་མུ་མུ།

तद्यथा ।

ॐ मुने मुने महामुनये स्वाहा ।

འདི་ལྟ་སྟེ།

ཐུབ་པ་ཐུབ་པ། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ལ།

ཨྀ་སམེ་སམེ་མུ་སམེ་རྟ་རྟ་མྱོ་སམ་སམ་མྱོ་མྱོ།

ॐ समे समे महासमे रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च ।

མཉམ་པ་མཉམ་པ། མཉམ་པ་ཆེན་པོ། བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྤང་སྤང་།

སཐ་པུཔི་[པ]པལམནི་སྒྲུ།

सर्वपापप्रशमने स्वाहा ।

ཐིག་པ་ཐམས་ཅད་རབ་དུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་གཞི་ཚུགས།

ནམ་མཁུ་སྤྱུལ་རིགྱེདྱི་དྲ་རྒྱུ་ལྷུ་ལ་དཔྱལ་དུ་ཡ།

नमः सुपरिकीर्तितनामधेयाय तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མཚན་ལེགས་པར་ཡོངས་བསྐྱགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ནམ་མཁུ་སམ་རྩ་ཨ་བསྐྱས་བེདྱི་དྲ་སྤྱུལ་ཤིཡི་དཔྱལ་དུ་ཡ།

नमः समन्त-अवभासविजितसंग्रामश्रिये तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་ནས་སྤང་བ་གཡུལ་ལས་རྒྱལ་པར་སྐྱལ་བའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ནམ་མཁུ་ཨི་རྩ་ཀེདྱ་རྩེ་ཤིཡི་དཔྱལ་དུ་ཡ།

नम इन्द्रकेतुध्वजश्रिये तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དབང་པོ་དོག་གི་སྐྱལ་མཚན་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ནམོ་རྩ་པུ་སྤྱུ་སི་ཤར་རྩེ་ལ་དཔྱལ་དུ་ཡ།

नमो रत्नप्रभासेश्वरराजाय तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རིན་ཆེན་འོད་འཕྲོ་དབང་ཕྱག་གི་སྐྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ནམོ་ཨ་པུ་དྲི་དྲ་མྱེ་པུཾ་[ུ]་རྩེ་ལ་དཔྱལ་དུ་ཡ།

नमो अप्रतिहतभैषज्यराजाय तथागताय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་སྤྲོན་པའི་སྐྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཨེཾྱཱྃ་ཀྱམ་སྒྲིངྱཱྃ་ཨིདྱཱྃ་ཨྱཱྃ་ཨལལྱེཀྱིདྱཱྃ་ཤཱཱྃ་མྱལྱེཾྱཱྃ་།

एभ्यो नमस्कृत्वा इदं आर्य-अवलोकितेश्वरमुखोद्गीर्णम् ।

དེ་ཀྱམ་ས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ནས། འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱག་གི་ཞལ་ནས་གསུངས་
པ།

ཨམྱུ་ཡུལ་རྒྱུ་རྒྱུ་རྒྱུ་རྒྱུ་།

अमोघपाशराजानामहृदयम् ।

དོན་ཡོད་ཞགས་པའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་སྤྱིང་པོ།

ཏྲུག་ཏྲ་སྐུལ་སྤྱིདྱཱྃ་མཏྲ་མཆྱུ་ཨཱྱཱྃ་ཨིདྱཱྃ་ཨལྱཱྃ་ཨིཾྱཱྃ་།

तथागतसंमुखभाषितं महत्पर्वन्मध्ये । अहं इदानीं अवर्तयिष्ये ।

དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ལ་ཀུན་ནས་ཕྱོགས་ཏེ་འཁོར་ཆེན་པོའི་དབུས་སུ་གསུངས་པ་འདི་བདག་
གིས་ད་ནི་བསྐྱབས་པར་བཀྱེའོ། །

སིཾྱཱྃ་མེ་མཆྱུ་པདྱེ་སའྱཱྃ་ཀྱཱྱེ།

सिद्ध्यन्तु मे मन्त्रपदाः सर्वकार्याणि ।

བདག་ལ་གསང་སྤྱགས་ཀྱི་ཆིག་ཀྱམས་དང་དགོས་པ་ཐམས་ཅད་[འ]གྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག

སའྱཱྃ་སྤེཾྱཱྃ་མམ་སའྱཱྃ་སྤྱན་རྒྱུ་རྒྱུ་རྒྱུ་[ཨྱ]མྱུ་།

सर्वभयेभ्यो मम सर्वसत्त्वानाञ्च रक्षा भवतु ।

བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འཛིགས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་སྤང་དུ་གསོལ།

| | | | |
|----------|-----------|-------------|-------------|
| ५५३॥ | ॐ'उर'उर | उरे'उरे | उरु'उरु |
| तद्यथा । | ॐ चर चर । | चिरि चिरि । | चुरु चुरु । |

२६'५'३॥

| | | | |
|---------|-------------|-------------|--------------|
| मर'मर | मिरे'मिरे | मुरु'मुरु | मरु'गुरु'गै |
| मर मर । | मिरि मिरि । | मुरु मुरु । | महाकारुणिक । |

सुष'स'हे'के'प'द'प'प

| | | | |
|---------|-------------|-------------|-------------|
| सर'सर | सिरे'सिरे | सुरु'सुरु | उरु'उरु |
| सर सर । | सिरि सिरि । | सुरु सुरु । | चुरु चुरु । |

| | | | |
|-------------|-------------|-------------|-------------|
| उरे'उरे | वरे'वरे | परे'परे | मिरे'मिरे |
| चिरि चिरि । | विरि विरि । | पिरि पिरि । | मिरि मिरि । |

| | | | |
|---------------|---------|-------------|-------------|
| मरु'पद्'रु'ग | ग'प'ग'प | गै'प'गै'प | गु'प'गु'प |
| महापद्महस्त । | कल कल । | किलि किलि । | कुलु कुलु । |

पुष'प'प'के'प'उर ।

| | | | |
|------------------|---------------|-----------|-------------|
| मरु'पु'स'स | पु'स'पु'स | प'स'प'स | प'स'प'स |
| महाशुद्धसत्त्व । | बुद्ध बुद्ध । | बोध बोध । | बोधि बोधि । |

सि'म'स'द'प'द'प'प'के'प'प ।

| | | | |
|-------------|---------|-------------|-----------|
| बोधय'बोधय। | गण'गण। | गिठि'गिठि। | गुण'गुण। |
| बोधय बोधय । | कण कण । | किणि किणि । | कुण कुण । |

པརམ་ཤུ་སྒྲ། ཀར་ཀར། ཀའི་ཀའི། ཀུར་ཀུར།
 ཕརམ་ཤུ་སྒྲ། ཀར་ཀར། ཀའི་ཀའི། ཀུར་ཀུར།
 ཕརམ་ཤུ་སྒྲ། ཀར་ཀར། ཀའི་ཀའི། ཀུར་ཀུར།
 ཕརམ་ཤུ་སྒྲ། ཀར་ཀར། ཀའི་ཀའི། ཀུར་ཀུར།

| | | | |
|---------------------|---------|--------------|-------------|
| ਅਨ੍ਹ੍ਰੁ'ਜ਼ੁਅ'ਸ਼ੁਜ਼ਾ | ਓਲ'ਓਲਾ | ਅਭੁਪ'ਅਭੁਪਾ | ਬੈਓਲ'ਬੈਓਲਾ |
| ਮਹਾਸਥਾਮਪ੍ਰਾਤ । | ਚਲ ਚਲ । | ਸਜ਼ਲ ਸਜ਼ਵਲ । | ਵਿਚਲ ਵਿਚਲ । |
| ਅਸ਼ੁ'ਕੇਕ'ਧੋ'ਬੋ'ਦਾ । | | | |

प्रुर्कय प्रुर्कय। जितत जितत। झर झर। झरे झरे।
 प्रचल प्रचल । एट्ट एट्ट । भर भर । भिरि भिरि ।

झुंझुंझुं फरंफरं फिंफिंफिं फुंफुंफुं
 भुर भुर । तर तर । तिरि तिरि । तुरु तुरु ।

ଭକ୍ତେନି ଅନୁଗ୍ରହେନା । ଅନୁପମପଦି ସେଠାରେ ।
 एह्येहि महाकारुणिक । महापशुपतिवेषधर ।

ཆུ་བྱོན་ཆུ་བྱོན་སྐྱལ་ཆེ་ཆེན་པོ་ཅན། །སྐྱལ་བདག་ཆེན་པོའི་ཆ་ལྷན་འཛིན་པ་པོ། །

ਫੇਰ ਫੇਰ । ਛੇੜੇ ਛੇੜੇ । ਝੁਟੁ ਝੁਟੁ । ਟਰ ਟਰ ।
ਧਰ ਧਰ । ਧਿਰਿ ਧਿਰਿ । ਧੁਰੁ ਧੁਰੁ । ਟਰ ਟਰ ।

བཙོམ་ལྟན། ལྷོ་བ།

| | | | |
|----------------------|--|----------------|--------------------|
| ཞུ་དྲི་ཅ། | ཡམ། | བརྩུཌ། | ཀུམ་བུ། |
| आदित्य | यम । | वरुण । | कुबेर । |
| ཉི་མ། | གཤེན་རྩེ་དང་། | ཚུ་ལྷ། | ལུས་ངན། |
| | | | |
| བསྐྱེ། | ཨི་རྩ། | བུ་ཡུ། | ཨ་མྲི། |
| ब्रह्म | इन्द्र । | वायु । | अग्नि । |
| ཆང་ས་པ། | དབང་པོ་དང་། | ལྷུང་ལྷ། | མི་ལྷ། |
| | | | |
| ཆེན་ད། | དེས་རྩི་གཏུ་ཨ་མྲི་ཅི་ཅ་རུ། | སུ་རུ་སུ་རུ། | |
| धनद । | देवऋषिगण अभ्यर्चितचरण । | सुरु सुरु । | |
| ཁོ་ར་སྤྱིན་ལྷ་ཡི་ནི། | དང་སྤོང་ཚོགས་ཀྱིས་ཞབས་ནི་མངོན་མཚན་པ། । | | |
| | | | |
| ཅུ་རུ་ཅུ་རུ། | མུ་རུ་མུ་རུ། | སྤུ་རུ་སྤུ་རུ། | སུ་རུ་སྤུ་རུ་ར་ |
| चुरु चुरु । | मुरु मुरु । | घुरु घुरु । | सनत्कुमार |
| | | | ཀུན་འགྱུར་གཞོན་ནུ་ |
| | | | |
| རུ་དྲ་ | བུ་ས་པ། | བི་ལྷུ་ | ཆེན་ད་ |
| रुद्र | वासव । | विष्णु | धनद |
| དཔག་པོ་ | གནས་འཛོག་དང་། | ཁྱུ་པ་འཛུག་ | ཁོ་ར་སྤྱིན་ |

| | | | |
|--------------------------------|-------------------|---|-----------------------|
| བུཡ། | ཅུ། | རྩི་རྒྱལ། | བི་རྒྱལ། |
| वायु | अग्नि । | ऋषिनायक । | विनायक । |
| རྒྱ་ལྷ་ | མེ་ལྷ་དང་། | བླ་མོ་འདྲིན་པ། | རྣམ་འདྲིན་ལ་སྟོན་པའི། |
| བདུ་བི་བི་རྩ་བེལ་རྩ་ | རྩ་རྩ་ | རྩི་རྩི་ | རྩུ་རྩུ་ |
| बहु विविध वेषधर । | धर धर । | धिरि धिरि । | धुरु धुरु । |
| ཆ་བྱད་རྣམ་པ་མང་པོ་འདྲིན་མཛད་པ། | | | |
| དར་དར་ | ཐར་ཐར་ | སྒར་སྒར་ | ཡར་ཡར་ |
| तर तर । | थर थर । | घर घर । | यर यर । |
| དར་དར་ | པར་པར་ | སར་སར་ | བར་བར་ |
| हर हर । | पर पर । | सर सर । | वर वर । |
| | | | वरदायक । |
| | | | མཆོག་སྟུང་། |
| སམ་རྩ་ཅུ་བའི་ཀྱི་དྲུག་། | བི་འོ་ཀྱི་དྲུག་། | འོ་ཀྱི་ཤར་ | |
| समन्त-अवलोकित । | विलोकित । | लोकेश्वर । | |
| ཀུན་ནས་སྒྲུན་རས་གཟིགས། | རྣམ་པར་གཟིགས། | འདྲིན་ཏིན་དབང་ཕུག | |
| མཛྲ་ཤར་ | རྩི་སྒྲུབ་ཏིན་ཤར་ | སའ་གྲུ་སམ་འོ་ཀྱི་དྲུག་ཅུ་བའི་ཀྱི་དྲུག་། | |
| महेश्वर । | त्रिभुवनेश्वर । | सर्वगुणसमलंकृत अवलोकितेश्वर । | |
| སྲིད་གསུམ་དབང་ཕུག་ | དབང་ཕུག་ཆེ། | ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱིས་ཡང་དག་པར་བརྒྱན་པ་ | |
| | | སྒྲུན་རས་གཟིགས་དབང་ཕུག་། | |

1. ཅུ་བའི་ཀྱི་དྲུག་- བཟུང་།

2. བི་འོ་ཀྱི་དྲུག་- བཟུང་།

मुहु'मुहु' मुहु'मुहु'

मुहु मुहु । मुरु मुरु ।

रक्ष'रक्ष' रक्ष'रक्ष' रक्ष'रक्ष'

रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च ।

वद'वद' वद'वद' वद'वद' वद'वद' ।

सर्व'पद्म'वेभ्यः ।

सर्वोपद्रवेभ्यः ।

शिव'रक्ष' वद'वद' वद'वद' ।

सर्व'पद्म'वेभ्यः ।

सर्वग्रहेभ्यः ।

वद'वद' वद'वद' वद'वद' ।

सर्व'विषेभ्यः ।

सर्वविषेभ्यः ।

वद'वद' वद'वद' वद'वद' ।

[रक्ष'रक्ष']

[रक्ष रक्ष]

सुद'स' सुद'स' सुद'स' सुद'स' ।

मुहु'मुहु' मुहु'मुहु'

मुय मुय । मुञ्च मुञ्च ।

सर्व'भयेभ्यः ।

सर्वभयेभ्यः ।

वद'वद' वद'वद' वद'वद' ।

सर्व'पद्म'वेभ्यः ।

सर्वोपसर्गेभ्यः ।

वद'वद' वद'वद' वद'वद' ।

सर्व'पद्म'वेभ्यः ।

सर्वव्याधिभ्यः ।

वद'वद' वद'वद' वद'वद' ।

सर्व'ज्वरेभ्यः ।

सर्वज्वरेभ्यः ।

वद'वद' वद'वद' वद'वद' ।

ཨེལྱི་ བརྒ། བརྒྱན། ཏྲུན། ཏཱན།
 एवं वध । बन्धन । ताडन । तर्जन ।
 རི་བཞིན་དུ་ གསལ་པ་དང་། བཅིང་བ་དང་། བཞིག་པ་དང་། སྒྲི་བ་དང་།

རྒྱུ། ཏསྒྱེ། ཨེལྱི། ཨུད་ཀ། བེཡ།
 राज । तस्कर । अग्नि । उदक । विष ।
 རྒྱལ་པོ་དང་། ཚམ་ཀྱན་དང་། མེ་དང་། རྩ་དང་། ཏུག་དང་།

ཤསྒྱ། པ་མེལྱི་ཙ་ཀ། ཀླུ་ཀླུ། ཀླི་ཀླི། ཀླུ་ཀླུ།
 शस्त्र । परिमोचक । कण कण । किणि किणि । कुणु कुणु ।
 མཚོན་ཆ་ལས་ ཡོངས་སུ་སྒྲེལ་བར་མཛད་པ་པོ།

ཙར་ཙར། ཙི་ཙི་ཙི། ཙུ་ཙུ། ཨེལྱི་ལ་བལ་བྱུ་ལྔ།
 चर चर । चिरि चिरि । चुरु चुरु । इन्द्रिय बल बोध्यङ्ग ।

དབང་པོ་སྒྲོབས་དང་བྱང་ཆུབ་ཡན་ལག་དང་།

ཙཏར་ཨུ་ཆ་སྒྲུ་སྒྲུ་པ་ཀྱེ། ཏཔ་ཏཔ། ཏམ་ཏམ།
 चतुरार्यसत्यसंप्रकाशक । तप तप । तम तम ।
 འཕགས་པའི་བདེན་བཞི་ཀྱན་ནས་གསལ་མཛད་པ།

དམ་དམ། སམ་སམ། མས་མས། རྩམ་རྩམ། མཏྲ་ཀྱུ་རྩི་ཀ།
 दम दम । सम सम । मस मस । धम धम । महाकारुणिक ।
 ཐུགས་ཇི་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་ཞིང་།

མདྲ་ཏམ་ཞུགས་པའི་མཚན།

महातमोऽन्धकारविधमन् ।

ཁ་ལྷན་མཐུན་པ་རིལ་རྒྱུ།

षट्पारमितापरिपूरक ।

མུན་པ་མུན་ནག་ཆེན་པོ་འཛོམས།

ཕ་རེལ་ཕྱིན་དྲུག་ཡོངས་ཚྲོགས་པ།

ਅੰਤਰ-ਅੰਤਰ

သိလျှ်၊ သိလျှ်၊

ਸੁਨ੍ਹਾ ਸੁਨ੍ਹਾ

मल मल ।

मिलि मिलि ।

मुलु मुलु ।

੨੨੨੨੨੨

𠄎'𠄎

५५ ५५

ਟਟ ਟਟ ।

ਠਠ ਠਠ ।

टिटि टिटि ।

तुतु'तुतु।

ਸ੍ਰੀ ਸ੍ਰੀ ਸ੍ਰੀ ਸ੍ਰੀ

[illegible]

५५ ५५ ।

ਠਿਠਿ ਠਿਠਿ ।

ਕੁਰੁ ਕੁਰੁ ।

ཨེ་ཀེ་[ཱེ་]ཡ་ཙམ་གྱི་ཏ་པ་རིག་པ།

ཨེནི་ཨེནི་མདུ་གུ་རྒྱུ་གླིང་།

एणेयचर्मकृतपरिकर ।

एहि एहि महाकारुणिक ।

འི་དྲགས་ལྷགས་པ་ལས་བྱས་ཡོ་བྱད་ཅན། །

ཚུར་སྤྱོད་[ཕྱོད་]་ཚུར་སྤྱོད་[ཕྱོད་]

ཐུགས་ཇི་ཆེན་པོ་ཅན། །

ཧྲིཤ་མཆིཤ་མདྲ་ལྟ་གཏ་སྐྱུག།

ईश्वर महेश्वर महाभूतगण संभञ्जक ।

དབང་ཕྱག་དབང་ཕྱག་ཆེན་¹་པོ་འབྱུང་པོ་ཡི། །ཆོག་ས་ཆེན་ཀུན་ནས་འཛོམས་པར་མཛད་པ་པོ།

1. ଚକ୍ର- ଖ.

ཀུརུ་ཀུརུ། པར་པར།

कुरु कुरु । पर पर ।

སྐར་སྐར། ཀར་ཀར།

सर सर । कर कर ।

गुह्यं गुह्यं मन्त्रं मन्त्रं

कुट्ट कुट्ट । मट मट ।

མདུ་གུ་རྒྱུ་ཅི་ཀ། བྱེད་ཡོད་པ་བྱིད།

महाकारुणिक । श्वेतयज्ञोपवीत ।

༡༥༩ །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་བྱུང་དཀར་པོ་
དང་། །

མཐུན་ཤིང་སྒྲིང་ཇུ་མྱུ་ཤ།

सर्वज्ञशिरसिकृतजटामुकुट ।

། ཀུན་མཁྱེན་དབུར་བཞུགས་རལ་པའི་
ཅོད་པན་ཅན། །

འཇུག་སྐྱུ་པོ་ལྟ་ཡང་ཤུགས་

ध्यानसमाधिविमोक्ष अप्रकम्प्य ।

།བསམ་གཏན་དྲིང་འཛིན་རྣམ་ཐར་མི་
གཡོ་ལྷན། །

མདུ་གཟུང་།

महाकारुणिक ।

।सुप्रसन्नैःकेऽहम्।

ཨ་མི་དྲུག་ཡ་སྤྲུལ།

अमिताभाय स्वाहा ।

འོད་དཔག་མེད་ལ།

མུར་སྐྱུ་ཕྱམ་དྲུལ་སྤྲུལ།

मारसैन्यप्रमर्दनाय स्वाहा ।

བདུད་ཀྱི་དཔུང་རབ་དུ་འཛོམས་པ་ལ།

ཨ་མི་དྲུག་སྤྲུལ་སྤྲུལ།

अमिताभसुताय स्वाहा ।

འོད་དཔག་མེད་ཀྱི་སྐུ་སྤྲུལ་ལ།

ཨ་མུལ་སྤྲུལ།

अभयाय स्वाहा ।

མི་འཇིགས་པ་ལ།

ཨ་མུལ་སྤྲུལ་སྤྲུལ།

अभयप्रदाय स्वाहा ।

མི་འཇིགས་པ་རབ་དུ་སྐྱུ་པ་ལ།

ཇེལ་སྤྲུལ།

जयाय स्वाहा ।

རྒྱལ་པ་ལ།

བེང་ལུལ་སྤྲུལ།

विजयाय स्वाहा ।

རྒྱལ་པར་རྒྱལ་པ་ལ།

ཇེལ་བེང་ལུལ་སྤྲུལ།

जयविजयाय स्वाहा ।

རྒྱལ་ཁིང་རྒྱལ་པར་རྒྱལ་པ་ལ།

བར་དུལ་སྤྲུལ།

वरदाय स्वाहा ।

མཚོག་སྤྲུལ་པ་ལ།

བར་སྤྲུལ་སྤྲུལ།

वरप्रदाय स्वाहा ।

མཚོག་རབ་དུ་སྤྲུལ་པ་ལ།

ཨ་ཀལ་མྱུ་ཕྱམ་མུལ་སྤྲུལ།

अकालमृत्युप्रशमनाय स्वाहा ।

དུས་མ་ཡིན་པའི་འཆི་བ་རབ་དུ་ཁི་བར་བྱེད་པ་ལ།

ཨིད་ཕྱེ་མི་ཀམ་ཀུ་རྒྱུ་ཏི་སྤྲུལ།

इदञ्च मे कर्म कुरु नमोऽस्तु ते स्वाहा

བདག་གི་ལས་འདི་ཡང་མཛོད་ཅིག་ཁྱོད་
ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །སྤྲུལ།

ॐ रण रण हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ रण रण हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ जय हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ जय हूँ फट् स्वाहा ।

शुभं वा

ॐ ज्र जि जुं स्वाहा ।

ॐ ज्र जि जुं स्वाहा ।

ॐ हूँ जय स्वाहा ।

ॐ हूँ जय स्वाहा ।

शुभं वा

ॐ ह्रीः । त्रैलोक्यविजय अमोघपाश अप्रतिहत ह्रीः हः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीः । त्रैलोक्यविजय अमोघपाश अप्रतिहत ह्रीः हः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीः । त्रैलोक्यविजय अमोघपाश अप्रतिहत ह्रीः हः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ वसुवति स्वाहा ।

ॐ वसुवति स्वाहा ।

ॐ आरोलिक् स्वाहा ।

ॐ आरोलिक् स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ आरोलिक् ह्रीः ह्रीः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ आरोलिक् ह्रीः ह्रीः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ आरोलिक् ह्रीः ह्रीः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ आरोलिक् ह्रीः ह्रीः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

नियत-अनियत-वेदनीय-अशुभस्य मे भगवन् कर्मणो अशेषतः क्षयं कुरु स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ॐ बहुले बहुले स्वाहा ।

ཨོྃ་བྱུ་རྩམ་སྐྱུ་ཡ་སྤྲུ།

ॐ बुद्धधर्मसंघाय स्वाहा ।

ཨོཾ་སངས་རྒྱལ་དང་ཚེས་དང་དགེ་འདུན་ལ་སྐུ་ཏུ། །

(एकादशाननधारणी)

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དག་བཙུམ་པ་ཡང་དག་པར་ཐོགས་པའི་སངས་རྒྱལ་རྣམས་ལ་སྤྱད་
འཆལ་ལོ། །

།བདག་ལ་མངོན་པར་དབང་བསྐྱར་གསོལ། །

| | |
|---------------------------------|------------------------------------|
| སའ་ཏྲུག་ཏུ། | སུག་ཏུ་ཕྱབ་ཅན་ |
| सर्वतथागताः । | सुगतप्रवचन |
| དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་དང་། | །བདེ་བར་གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་གྱི། । |
| ཨ་མྲི་ཏ་ཨ་མྲི་ཤེ་རྟེ། | མདྲ་མདྲ་མཆ་པདེ་། |
| अमृत-अभिषैकैर् । | महामुद्रामन्त्रपदैः । |
| བདུད་རྩི་མཛོན་པར་དབང་བསྐྱར་དང་། | །ཕྱག་ཆེན་ཐུགས་གྱི་ཆེན་རྣམས་གྱིས། । |
| ཨྲུ་ར་ཨྲུ་ར། | མམ་ཨྲུ་ཨྲུ་རྩི་རྩི། |
| आहर आहर । | मम आयुस्संधारणि । |
| ཀུན་བཟུས་ཀུན་ནས་བཟུ་བར་མཛོད། | །བདག་གི་ཆེ་ནི་ཀུན་འཛིན་མ། । |
| ཤོད་ཡ་ཤོད་ཡ། | ཤི་ཤོད་ཡ་ཤི་ཤོད་ཡ། |
| शोधय शोधय । | विशोधय विशोधय । |
| སྦྱང་ས་སྦྱང་ས་ | རྣམ་སྦྱང་ས་རྣམ་པར་སྦྱང་ས། |
| གགན་སྦྱང་བ་ཤི་བྱུང་། | ཨྲུ་ཤི་བྱུང་པ་ཤི་བྱུང་། |
| गगनस्वभावविशुद्धे । | उष्णीषविजयपरिशुद्धे । |
| ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་རྣམ་དག་མ། | །གཙུག་ཏོར་རྣམ་གྱལ་ཡོངས་དག་མ། । |
| སཏྲ་སྦྱ་རྩི་སཏྲ་ཏི། | སའ་ཏྲུག་ཏུ་ཨ་བའི་གྱིན། |
| सहस्ररश्मिसञ्चोदिते । | सर्वतथागत-अवलोकिति । |
| འོད་ཟེར་སྦྱང་ཕྱག་ཀུན་འབྱེད་མ། | །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གཟིགས་མ། । |

༥༥ །ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་ཆེ། །

विमुक्ते विमुक्ते मद् विमुक्ते ।
 विमुनि विमुनि महविमुनि ।
 क्ख सुव क्ख सुव क्ख सुव के ।
 ममदि सुमदि णमण्ण ।
 ममति सुमति तथता ।
 ममिक्खिक्खि ममिक्खि णिक्खि ।

विमुत्तं पुद्गलं पुद्गलं ।
 विस्फुटबुद्धिशुद्धे ।
 श्लोके क्ख सुव क्ख सुव के ।

विहय विहय ।
 विजय विजय ।
 क्ख पदं क्ख पदं क्ख पदं क्ख पदं ।

श्लोके क्ख सुव क्ख सुव के ।
 स्फारय स्फारय ।
 क्ख मद् क्ख मद् क्ख मद् क्ख मद् ।

पुद्गलं पुद्गलं ।
 शुद्धे शुद्धे ।
 दयं उदं दयं मद् दयं मद् क्ख मद् ।

मदि मदि मद् मदि ।
 मति मति महामति ।
 श्लोके क्ख सुव क्ख सुव के ।
 मद् मद् मद् मद् मद् मद् ।
 भूतकोटिपरिशुद्धे ।
 मद् दयं मद् दयं मद् दयं मद् दयं ।

हे हे जय जय ।
 श्लोके क्ख सुव क्ख सुव के ।

श्लोके क्ख सुव क्ख सुव के ।
 स्मर स्मर । स्फर स्फर ।
 मद् मद् मद् मद् मद् मद् ।

मद् मद् मद् मद् मद् मद् ।
 सर्वबुद्ध-अधिष्ठान-अधिष्ठिते ।
 मद् मद् मद् मद् मद् मद् ।
 मद् मद् मद् मद् मद् मद् ।

पुद्गलं पुद्गलं ।
 बुद्धे बुद्धे ।
 मद् मद् मद् मद् मद् मद् ।

བཤེ་བཤེ་མདྲ་བཤེ།

वज्रे वज्रे महावज्रे ।

རྩྭ་ཆེན་མོ་རྩྭ་བཟང་།

བེང་ཡ་གཞི།

विजयगर्भे ।

རྒྱལ་པར་གྱལ་བའི་སྤྲིང་པོ་མ།

བཤྲོ་བླ་བཤ།

वज्रोद्भवे ।

རྩྭ་ཆེ་འབྱུང་མ་

བཤེ་བཤེ་ཅི།

वज्रे वज्रिणि ।

རྩྭ་ཆེ་ཅན་མ་རྩྭ་ཆེ་མ།

སའ་ས་སྐྱ་རྒྱ་ལྡན་པ་འཁྱེད་པ་དུ།

सर्वसत्त्वानाञ्च कायपरिशुद्धिर्भवतु ।

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྒྱམས་ཀྱི་ཡང་།

།ལུས་ནི་ཡོངས་སུ་དག་པར་མཛོད།

སའ་ད་ཐུག་དུ་ཕྱི།

सर्वतथागताश्च ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱིས་ཀྱང་།

སུ་བཤེ་བཤྲ་གཞི་ངཡ་གཞི།

सुवज्रे वज्रगर्भे जयगर्भे ।

།རྩྭ་ཆེན་མོ་གྱལ་བའི་སྤྲིང་། །

བཤྲ་ལྡན་གཞི།

वज्रज्वालागर्भे ।

།རྩྭ་ཆེ་འབྱུང་བའི་སྤྲིང་པོ་མ། །

བཤྲ་སྐྱ་བཤ།

वज्रसंभवे ।

རྩྭ་ཆེ་འབྱུང་མ།

བཤྲ་སྐྱ་བཤ་མམ་གཞི་སྐྱ།

वज्रं भवतु मम शरीरम् ।

།རྩྭ་ཆེ་མཛོད་ཅིག་བདག་གི་ལུས། །

མེ་སདྲ་སའ་གཏི་པ་འཁྱེད་ཕྱི།

मे सदा सर्वगतिपरिशुद्धिश्च ।

།བདག་གི་རྟོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །

།དག་དུ་ཡོངས་སུ་དག་པར་མཛོད། །

མྱོ་སམྱ་ཤུས་ཡུ།

मां समाश्वासयन्तु ।

།བདག་ཅག་དབུགས་དབྱང་མཛོད་དུ་གསོལ། །

ଆଁ ଆଁ

सिद्ध्य सिद्ध्य ।

ସ୍ୱପ୍ନ ସ୍ୱପ୍ନ ଓ

ဝိသိန္ဓယ၊ ဝိသိန္ဓယ၊

विबोधय विबोधय ।

རྒྱལ་རྟོགས་མཛོད་རྒྱལ་རྟོགས་མཛོད།

ਬਿਅੰਤਘਾ ਬਿਅੰਤਘਾ।

विमोचय विमोचय ।

ནཱ་པར་གྲོལ་མཛོད་ནཱ་གྲོལ་མཛོད།

ဝီရိယံ ဝီရိယံ

विशोधय विशोधय ।

ནམ་ཐྱོད་ས་ནམ་པར་ཐྱོད་ས།

མཐུན་རྒྱུ་པའི་བྱུང་།

समन्तरश्मिपरिशुद्धे ।

། ཀུན་ནས་འོད་ཟེར་ཡོངས་དག་མ། །

ཨ་ཁྱིའོ་ཨ་ཁྱིའོ།

अधिष्ठान-अधिष्ठिते ।

।ཕྱིན་གྱི་སྒྲུབས་ཀྱིས་ཕྱིན་བསྒྲུབས་མ། །

མདྲ་མྱུ་མཆོ་པདིེ་སྤྲུ།

महामुद्रामन्त्रपदैः स्वाहा ।

༥༥ །ཕུག་ཆེན་གསང་ཡུགས་ཆེན་རྣམས་ཀྱིས། །

ཨོ་ཨམྲིང་ཨུཡུང་དེ་སྤྲུལ།

ॐ अमृत-आयुर्ददे स्वाहा ।

འཆི་བ་མེད་པའི་ཆེ་སྤྱན་མ།

ॐ आः हूं हां ह्रीः अं अः रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च स्वाहा ।

བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྲུངས་སྤྲུངས། ॥

(उष्णीषविमलधारणी)

नमः सर्वतथागतानाम् ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀྱི་ལ་ཕྱག་འཆལ།

ॐ महाचिन्तामणि ज्वलन सागरगम्भीर आकर्षय आकर्षय ।

ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཆེར་འབར་བའི། །སྤྱི་མཆོ་ཟབ་མོ་འགྲུགས་གིང་འགྲུགས། །

ཨུལ་རྩུ་ཨུལ་རྩུ་ར།

आयुं धर आयुं धर ।

ཀླུ་ཀླུ།

क्षण क्षण ।

ཐུའུ་ཐུའུ།

क्षुणु क्षुणु ।

སྩུ་ར་སྩུ་ར།

सन्धर सन्धर ।

ཁྲིཾྀ་ཁྲིཾྀ།

क्षिणि क्षिणि ।

སའ་ཏ་ཐུག་ཏ་མཏུ་སམཡེ་ཏཱི་ཏཱི།

सर्वतथागतमहासमये तिष्ठ तिष्ठ ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི།

དམ་ཆེན་ཆེ་ལ་བདན་པར་གནས།

མཏུ་ཐུབན་སྐྱེ་ལ་མེ་མོ་རྩལ་མྱོ་སའ་སྩྱུ་མ།

महाभुवनसागरे संशोधय मां सर्वसत्त्वांश्च ।

བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། སྤྱིད་པའི་སྐྱེ་མཆོ་ཆེ་ཀུན་སྦྱངས།

རྒྱག་མའི་སའ་པུཔ་བེམལེ།

भगवति सर्वपापविमले ।

བཙེམ་ཐུན་སྤྱིག་ཀུན་ངེ་བུལ་མ།

སྦྲུ་སྦྲུ།

स्फुट स्फुट ।

ཇལ་ཇལ་ཇལ་ལཱེ།

जय जय जय लब्धे ।

རྒྱལ་ཁིང་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་ཐོབ་མ།

སྦྲུལ་སྦྲུལ།

स्फोटय स्फोटय ।

བེག་ཏ་ཨུའ་རེ་རྩལ་ཏ་རེ།

विगत-आवरणे भयहरणे ।

སྦྱིབ་པ་བུལ་མ་འཇིགས་འཕྲོག་མ།

རྩྱུ་རྩྱུ་རྩྱུ་མྱིཏུ་དར་རྩེ།

हूँ हूँ हूँ मृत्युदण्डधरे ।

འཆི་བདག་དབུག་པ་འཇིན་མཛད་མ།

སམནྟ་ལྷེ་སམརྟ་བྱལལྷི་ཀེ་ཏེ།

समन्तमुखे समन्तव्यवलोकिते ।

ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਬਿੰਦਾ ਭ੍ਰਾਤ੍ਰਿਕਾ ਭ੍ਰਾਤ੍ਰਿਕਾ

अमोघविमल आकर्षय आकर्षय ।

།དོན་ཡོད་རྩི་བྲལ་འབྲུག་ས་ཤིང་འབྲུག་ས་
མཇེད་པ། །

ལྷ་ར་ལྷ་ར་སྟོན་སྟོན།

भर भर संभर संभर ।

མད་མུ་བེལ་གཏི།

महामुद्राविलोकिते ।

|ཕྱག་སྐྱོ་ཆེན་མོ་རྣམ་གཟིགས་མ། |

अथः अथः

सिद्धे सिद्धे ।

ཐུབ་པ་མ་ཐུབ་པ་མ།

ပပ်ရှ်၊ ပပ်ရှ်၊

बोधनि बोधनि ।

རྟོགས་བྱེད་མ་རྟོགས་བྱེད་མ།

འཇུ་རམི་དྲུ་པ་རི་ཡུ་རེ།

षट्पारमिता परिपूरणि ।

པ་རི་ལ་ཕྱིན་དུག་ཡོངས་ཇོགས་མ། ।

སའ་དྲུག་ཏྲཱིྱཱ་པ་བེལྱེ་ཏེ་སྐྱུ།

सर्वतथागतोष्णीषविलोकिते स्वाहा ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་གཙུག་ཏེ་ར་
རྒྱམས་གཟིགས་མ།

སའ་དྲུག་ཏྲུ་གུ་ཨ་རྩི་རྩི་ཏེ་སྐྱུ།

सर्वतथागतगुह्य अधिष्ठान अधिष्ठिते स्वाहा ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གསང་བ་ཡི། ཕྱིན་གྱི་རྒྱལ་ས་ཕྱིན་བརྒྱལ་ས་མ། ཆེ་སྤྱིན་མ།

ཨུཡུ་རྩི་སྐྱུ།

आयुर्ददे स्वाहा ।

1. ཡུ་རྩི་དེ་སྐྱུ།

पुण्य ददे स्वाहा ।

བསོད་རྒྱམས་སྤྱིན་མ།

2. ཡུ་རྩི་བེལྱེ་ཏེ་སྐྱུ།

पुण्य विलोकिते स्वाहा ।

བསོད་རྒྱམས་རྒྱམ་གཟིགས་མ།

3. ཡུ་རྩི་ཨ་བེལྱེ་ཏེ་སྐྱུ།

पुण्य अवलोकिते स्वाहा ।

བསོད་རྒྱམས་ཀུན་གཟིགས་མ།

མྱི་དྲུ་དམྱེ་སྐྱུ།

मृत्युदण्डे स्वाहा ।

འཆི་བདག་དུག་པ་མ།

ཡམ་དུ་ཏེ་སྐྱུ།

यमदण्डे स्वाहा ।

གཤེན་ཇོ་དུག་པ་མ།

4. ཡམ་དུ་ཏེ་སྐྱུ།

यमदूते स्वाहा ।

གཤེན་ཇོ་པོ་ཉ་མ།

1. ཡུ་རྩི་ - ཀ.

2. ཡུ་རྩི་ - ཀ.

3. ཡུ་རྩི་ - ཀ.

4. ཡམ་དུ་ཏེ་ - མ.

ལྷན་མཛད་མ།

གྱུ་ས་མཛད་མ།

འཇིན་མཛད་མ།

མོ་མོར་འབྲང་མ།

མདངས་ལྷན་མ།

གཟི་བཞིན་ལྷན་མ།

སྐྱལ་པ་ལྷན་ལ། དེ་པལྱིན་གཤེགས་ཀྱི་ཕུག་སྐྱལ་། ཁྱིན་གྱི་རྒྱལ་གྱི་ཁྱིན་པརྒྱལ་ལ། ॥

॥ ཨི་མེད་ཀྱི་གཟུངས་ཤུང་། (विमललघुधारणी)

དུས་གསུམ་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ།

1. संज्ञावर्ति - क.

སང་ཏུ་ཐུག་ཏུ་ཉིད་ལ་གཞི་ལྟ་ལྟ་

सर्वतथागतहृदयगर्भे ज्वल ज्वल ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི། ཐུགས་ཀྱི་སྤྱིང་པོ་འབར་ཞིང་འབར། །

ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་

སྤྱིང་པོ་མཁ་ལྷུ་ལྷུ།

धर्मधातुगर्भे ।

संभर मम आयुः ।

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་སྤྱིང་པོ་ལ། རྒྱས་པར་མཛོད་ཅིག་བདག་གི་ཆེ། །

སྤྱིང་པོ་མཁ་སང་ལྷོ་

संशोधय मम सर्वपापम् ।

སྤྱིང་པོ་མཁ་བདག་གི་སྤྱིང་པོ་ལྷོ་། །

སང་ཏུ་ཐུག་ཏུ་སམ་རྩོམ་པོ་བེམ་ལེ་བེམ་ལེ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་

सर्वतथागतसमन्तोष्णीषविमले विशुद्धे हूं हूं हूं हूं ।

ཀུན་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གྱི། བཅུག་ཏུ་རྩི་མེད་རྣམ་དག་ལ། །

ཨོཾ་པོ་སྤྱིང་པོ་ལྷོ་། །

अं वं सं जः स्वाहा ।

✽ གསང་བ་རིང་བསྐྱེད་ཀྱི་གཟུངས་ཀྱི། (གུ་མ་ཐུ་ཐུ་ཐུ་)

ནམ་སྤྱིང་ལྷོ་ལྷོ་། སང་ཏུ་ཐུག་ཏུ་ལྷོ་

नमस्त्रैयध्वकानां सर्वतथागतानाम् ।

དུས་གསུམ་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཐུག་འཆལ་ལོ། །

ॐ भुव भवान् वरे वचतौ ।

ॐ भुव भवान् वरे वचतौ ।

सर्वतथागतधातुधरे ।

सर्वतथागतधातुधरे ।

देवविक्कं पसेयसं पगुक्कं पुं देवसं पसेयसं । पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

देवसं पसेयसं पसेयसं पसेयसं ।

तथागतधर्मचक्रप्रवर्तने ।

देवविक्कं पसेयसं पसेयसं पसेयसं । देवविंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

सर्वतथागत-अधिष्ठिते ।

सर्वतथागत-अधिष्ठिते ।

देवविक्कं पसेयसं पगुक्कं पुं देवसं पसेयसं ।

देवविंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

बोधनि बोधनि ।

देवविंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

संभोधनि संभोधय ।

संभोधनि संभोधय ।

गुक्कं पसेयसं पसेयसं पसेयसं ।

उत्तु उत्तु उत्तु उत्तु ।

उत्तु उत्तु उत्तु उत्तु ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

पद्विंशतिं पं कुलं महेष्वायं पसेयसं ।

उत्तु उत्तु उत्तु उत्तु ।

उत्तु उत्तु उत्तु उत्तु ।

उत्तु उत्तु उत्तु उत्तु ।

སའ་ལྷུབ་རྒྱལ་མའ་ཡུལ་བེག་ཏེ། ཏུར་ཏུར། སའ་ཤོག་བེག་ཏེ།

सर्व-आवरणानि सर्वपापविगते । हुरु हुरु । सर्वशोकविगते ।

སྒྲིབ་པ་ཀུན་དང་སྒྲིབ་པ་ཀུན་བྲལ་མ། ཟུང་ན་ཀུན་དང་བྲལ་མ།

སའ་ཏུག་ཏུ་ཤིང་ཡ།

བརྒྱུ་ཅི་སྐྱབ་སྐྱབ།

सर्वतथागतहृदय ।

वज्रिणि संभव संभव ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་སྤྲིང་པོ་ཡི།

།དྲི་ཡང་དག་འཁྱུང་མ་ཀུན་འཁྱུང་མ། །

ཏུག་ཏུ་གུ་རྒྱུ་རྒྱུ་ཡུར།

བུརྒྱུ་སུབུརྒྱུ་སའ་ཏུག་ཏུ།

तथागतगुह्यधारणी मुद्रे ।

बुद्धे सुबुद्धे सर्वतथागत ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་འཛིན་ཕུག་ཏུ་མ།

།སང་ཅིང་རབ་སང་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གྱི། །

ཨ་ཁྲི་ཁྲི་དེ་རྒྱུ་གཞི་སྒྲུ།

སམཡ་ཨ་ཁྲི་ཁྲི་དེ་སྒྲུ།

अधिष्ठिते धातुगर्भे स्वाहा ।

समय अधिष्ठिते स्वाहा ।

བྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་མ་ཤིང་བསྐྱེད་པོ་མ།

།དམ་ཆེག་གིས་ནི་བྱིན་བསྐྱབས་མ།

སའ་ཏུག་ཏུ་ཤིང་ཡ་རྒྱུ་ཡུར་སྒྲུ།

སུབྱུ་ཁྲི་དེ་སྒྲུ།

सर्वतथागतहृदयधातुमुद्रे स्वाहा ।

सुप्रतिष्ठितस्तूपे ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི།

།ལེགས་པར་རབ་གནས་མཚན་དེ་ནི་ནི། །

སྤྲིང་པོའི་ཤིང་བསྐྱེད་ཕུག་ཏུ་མ། །

༡༥ རྩེ་རྩེ། དེ་བཞིན་གསུངས་ཀྱང་སྤོང་ལྟམ་ལ།

འོད་ཟེར་བརྒྱ་ཕྱག་ཀུན་འབྱེད་མ། །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །དབང་བསྐྱར་ཡོན་ཏན་ཡོན་ཏན་ལྔ། །

སངས་རྒྱལ་གྱི་ཡོན་ཏན་འོད། །ནམ་མཁའི་མཐིལ་མ།

དེ་པལིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །ཕྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་མ་མཁའ་དབྱིངས་མ། །

གམི་གམི་ཕྱ་གམི་ཕྱ་གམི་སཱ་ཕྱེ་ཕྱ་གམ་ཏ[ན]།

सर्वपापविशोधने । हुलु हुलु । महाबोधिमार्गसंप्रतिष्ठिते ।
 श्रेयःपद्मस्य उदङ्गमस्तु । । ५८ ॥ कुवः केवः पतिः लवः पद्मस्य ॥

सर्वतथागतसुप्रतिष्ठिते शुद्धे स्वाहा ।
 देवदेवः पद्मस्य उदङ्गमस्तु । । ५९ ॥ देवः पद्मस्य उदङ्गमस्तु ॥

ॐ उद्धारः (मूलमन्त्रः)

ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते स्वाहा । जय जय स्वाहा ।
 देवदेवः पद्मस्य उदङ्गमस्तु । । ६० ॥ देवः पद्मस्य उदङ्गमस्तु ॥
 ॐ हुरु हुरु जयमुखे स्वाहा । ॐ वज्र-आयुषे स्वाहा ।
 कुवः केवः पतिः लवः पद्मस्य ॥
 देवदेवः पद्मस्य उदङ्गमस्तु ॥

ॐ १०८ उद्धारः (प्रतीत्यसमुत्पादहृदयः मन्त्रः)

ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुन्तेषान्तथागतो ह्यवदत् ।
 केवः केवः पतिः लवः पद्मस्य ॥ ६१ ॥ देवदेवः पद्मस्य उदङ्गमस्तु ॥

འདི་ལྟ་སྟེ། སྤྱོད་མ་སྤྱོད་ལ། སྤྱི་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤྱོད་ལ། དག་ཅིང་རྣམ་པར་དག་ལ། ལས་ཀྱི་སྤྱི་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དག་ལ། ॥

| | |
|------------------------------|--------------------------|
| ནམ་རྒྱུ་ཡུལ། | ཨྱོ་ཀྟཱཱི་ཀྟཱཱི། |
| नमो रत्नत्रयाय । | ॐ कंकनि कंकनि । |
| དཀོན་ཙམ་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། ། | ཨྱིག་པ་རྣམས་ཨྱིག་པ་རྣམས། |
| རྩེན་རྩེན། | རྩེན་རྩེན། |
| रोचनि रोचनि । | त्रोटनि त्रोटनि । |
| ཨྱིགས་ཨྱིགས། | ཆོད་ཅིག་ཆོད་ཅིག། |
| རྩེན་རྩེན། | ཕྱིར་ཕྱིར། |
| त्रासनि त्रासनि । | प्रतिहन प्रतिहन । |
| སྐྱུག་པར་གྱིས་སྐྱུག་པར་གྱིས། | སོ་སོར་ཆོམས་སོ་སོར་ཆོམ |

བདག་དང་སེམས་ཅན་སྐམས་ཅད་ཀྱི་ལས་གཅིག་ནས་གཅིག་དྲུ་བརྒྱད་པ་སྐམས་ཅད། ॥

དྲིཾླེ་མེ་སྒྲུབ།

दृढो मे भव ।

བདག་ལ་བརྟན་པར་མཛད་དུ་གསོལ།

སུཔྱེཾླེ་མེ་སྒྲུབ།

सुपोष्यो मे भव ।

བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་མཛད།

སའ་སྤྱིཾླེ་པལ་ལྷོ།

सर्वसिद्धिम्मे प्रयच्छ ।

བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྤྲོལ།

ཏ་ཏ་ཏ་ཏ་ཏོཾ་སྒྲུབ་བན་སའ་ཏ་ཐུག་ཏ་

ह ह ह ह होः भगवन् सर्वतथागत

ཏ་ཏ་ཏ་ཏ་ཏོཾ་བཅོམ་ལྷན་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གྱི། །རྗེ་ར་བདག་མ་འདྲོར།

བརྗེ་སྒྲུབ།

वज्री भव ।

རྗེ་ཅན་མཛད།

སུཏྱེཾླེ་མེ་སྒྲུབ།

सुतोष्यो मे भव ।

བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་དབྱེས་པར་མཛད།

ཅུ་རྟོཾླེ་མེ་སྒྲུབ།

अनुरक्तो मे भव ।

བདག་ལ་རྗེས་སུ་ཆགས་པར་མཛད།

སའ་ཀམ་སུ་ཅ་མེ་ཅེཾླེ་ཤེལ་ཀུར་རྒྱུ།

सर्वकर्मसु च मे चित्तं श्रेयः कुरु हूँ ।

ལས་ཀུན་ལ་ཡང་བདག་སེམས་ལ། །དག་
ལེགས་སུ་མཛད་རྒྱུ།

བཟླ་མེ་མུམྱ།

वज्र मा मे मुञ्च ।

མཏླ་སེམས་སྤྱོད་ལྷོ།

महासमयसत्त्व आः ।

དམ་ཆེག་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ལྷོ། ॥

ॐ हेतुगतिं यिमे वस्तुषा (हेतुकशताक्षर)

ཨོྭ་བཟླ་ཉི་ཟླ་སམལ་མཁུཤལལ། ཉི་ཟླ་ཉི་ཨོྭ་པཉིལ།

ॐ वज्रहेरुक समयमनुपालय । हेरुकत्वेनोपतिष्ठ ।

ཨོ་རྩོམ་ཆེ་བྲག་འཕྱར་དམ་ཆོག་ཆེས་སུ་གྱུར་ཅ། བྲག་འཕྱར་ཉིད་གྱིས་ཉི་པར་གནས་པར་མཛོད།

འདྲི་མེད་ལྟ་བུ།

སྤྱོད་མེ་སྒྲུབ།

दृढो मे भव ।

सुतोष्यो मे भव ।

བདག་ལ་བརྟན་པར་མཛད་དུ་གསོལ།

བདག་ལ་གྲིན་ཏུ་དབྱེས་པར་མཛོད།

ཨཱཱ་རྩོམ་ལྟ་བུ།

སྤྱི་ཕྱི་མེ་སྒྲུབ།

अनुरक्तो मे भव ।

सुपोष्यो मे भव ।

བདག་ལ་ཇེས་སྤྱ་ཆགས་པར་མཛོད།

བདག་ལ་གྲིན་ཏུ་སྒྱུ་པར་མཛོད།

स.स.सी.पु.पु.

སའ་ཀམ་སུ་ཅ་མེ་ཅེ་རྩྱ་ཤེལ་ཀུ་རྩྱ།

सर्वसिद्धिम्मे प्रयच्छ ।

सर्वकर्मसु च मे चित्तं श्रेयः कुरु हूँ ।

བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་ཚུལ།

ལས་ཀྱི་ལ་ཡང་བདག་སེམས་ལ། དགེ་ལེགས་
སྲུ་མཛོད་ཏྲློ།

ཏ་ཏ་ཏ་ཏ་ཏོཾ་སྒྲུབ་བལྟ་བཤྲ་ཏི་རུ་ཀ་ ལྷ་མི་ལུ་ཕྱེ ཏི་རུ་ཀོ་སྒྲུབ།

ह ह ह ह हो: भगवन् वज्रहेरुक

मा मे मुञ्च । हेरुको भव ।

ཏ་ཏ་ཏ་ཏ་ཏོཾ་བཙུགས་ལྷན་རྒྱེ་བྲག་འབྱང་། བདག་མ་འདོར་བྲག་འབྱང་ཉིད་དུ་མཛོད།

མདྲ་སམལ་སྒྲུ་ཞུ་ཏུ་ཡེ།

महासमयसत्त्व आः हूँ फट् ।

དྲིད་སྤྱའ་ཕྱུག་པུ་རྩེ་དེའཔིསྒྲུ་ར་སྒྲུ།

हितसुखश्चाकरबुद्धदेशविस्तार भव ।

དམ་ཆེག་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཞུ་ཏུ་ཡེ།

ཕན་བདེའི་འཕྲུང་གནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་
བསྐྱེད་པ་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ།

དྲན་པའི་སཔ་རིམ་རྒྱུ་ཞུ་ཏུ་ཡེ།

दानपतिसपरिवारस्य आयुः पुण्यधनश्च वर्धनं कुर्वन्तु ।

ཕྱིན་བདག་འཁོར་དང་བཅས་པའི་ཆེད་བསྐྱེད་ནམས་དང་ཚེས་འཕེལ་བར་མཛད་དུ་གསོལ།

ལྷན་མཆུ་ཡོང་སའ་ཨུལ་ཞུ་ཏུ་ཡེ།

वाह्यमध्ययोः सर्व अपक्ष उपशान्तिं कुर्वन्तु ।

ཕྱི་དང་ནང་གི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་སེམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བར་མཛད་དུ་གསོལ།

སྐྱེ་སཔ་རིམ་རྒྱུ་དཔའ་ཆེན་པོ།

संघसपरिवारस्य दश धर्मचर्या ।

སའ་སྐྱེ་ཏུ་ཕྱེད་པུ་རྩེ་དེའཔིསྒྲུ་ར་སྒྲུ།

सर्वसाधनं वर्धनं विस्तर भव ।

དཔེ་འདུན་འཁོར་དང་བཅས་པའི་ཆོས་རྒྱུད་བཅུ་ལྔ་པ་སེམས་ཅད་འཕེལ་ཞིང་རྒྱས་པར་
མཛད་དུ་གསོལ།

སའ་སྐྱེ་ཏུ་ཕྱེད་པུ་རྩེ་ཏུ།

सर्वसिद्धिमे प्रयच्छन्तु ।

མྱུ་ལྔ་ཏུ་ཕྱེད་པུ་རྩེ་ཏུ།

मंगलं कुर्वन्तु ।

བདག་ལ་དངོས་བྱུང་སེམས་ཅད་སྐྱེལ་དུ་གསོལ། བཟ་ཤིས་པར་མཛད་དུ་གསོལ། ॥

ॐ मङ्गलं पद्मेन प्रोक्तं तदा (पूजामेघधारणी)

ॐ नमो भगवते वज्रसारप्रमर्दने ।

तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।

वर्त्मन्युत्पत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं

वर्त्मन्युत्पत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं

ॐ नमो भगवते वज्रसारप्रमर्दने ।
तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय ।
वर्त्मन्युत्पत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं
वर्त्मन्युत्पत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं प्रवृत्तिं

तद्यथा ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

महावज्रे ।

महावज्रे ।

महावज्रे ।

महावज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

महावज्रे ।

महावज्रे ।

महावज्रे ।

महावज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।

महावज्रे ।

महावज्रे ।

ॐ वज्रे वज्रे ।
महावज्रे ।
ॐ वज्रे वज्रे ।
महावज्रे ।

གྲང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་སྤྲུགས་ཆེ་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པ་འང་མ་དཔལ་གཞིན་
ན་རྒྱུར་པ་ལ་སྤྲུག་འཆལ་ལོ། །

ཇལ་བཟོས་པོ་ལ། །

དམ་དང་སྒོ་སྒྲིལ་རྣམ་གྱུ་ལ་མ།

1. नास्ति- क.
2. क्षण- ख.
3. शूर- ख.

སའ་རྒྱ་སྐྱོ་རྒྱ་བཏི་བཅུལ་ཕྱས་རད་ཏྲ་མམ་སུཀར་སྐྱོ་སྐྱོ།
सर्वज्ञानसंधरि भगवति वच्छेल(?) प्रसरदे हस्त मम सुकर सिद्धि सिद्धि ।

ཡེ་ཤེས་ཐམས་ཅད་ཚུགས་པར་འཛིན་མ། བཅོམ་ལྷན་འདས་མ། མཚོ་རབ་ཕྱིན་མ། བདག་
གི་ལྷག་པ་ལྷགས་པར་མཛད་པའི་དངོས་གྲུབ་དངོས་གྲུབ།

བྱུང་བྱུང་ ཀམ་ཀམ་ ཕྱལ་ཕྱལ་ རྩར་རྩར་ བར་བར་ གཏྲ་གཏྲ་
बुद्ध बुद्ध कम्प कम्प पाल पाल धर धर वर वर गर्ज गर्ज

རྩས་རྩས། བཅི་བཅི། རྩྱུང་རྩྱུང་། འཛིན་འཛིན། མཚོག་མཚོག། ཕྱོགས་ཕྱོགས།

ཞུག་རྩྱུང་ཞུག་རྩྱུང་ རྒྱ་བཏི་ མུ་ བེལ་ཕྱ་ སྤྲུ།
आगच्छ आगच्छ भगवति मा विलम्ब स्वाहा ।

རྩར་བྱོན་རྩར་བྱོན། བཅོམ་ལྷན་འདས་མ། དམིགས་པ་མེད་པ་གཞི་ཚུགས། ॥

༺ ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྣམ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བརྒྱད་སྟོང་པའི་སྤྲལ་ས།
(अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्र)

དུས། ཞི་རྩི་བྱུ་ཕྱི་བེལ་སྤྲུ།
तद्यथा । ॐ ह्रीः श्रुति स्मृति विजये स्वाहा ।

འདི་ལྟེ། ཐོས་པ་དན་པ་རྣམ་གྲུལ་མ།

-
1. འཕྲོ་བ་- བ.
 2. རྩྱུང་རྩྱུང་- བ.

ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་དྲན་པ་ལེགས་པ་སྒྲིན། ॥

(विघ्नविनायकविद्यामन्त्र)

(मारत्रासकरीमन्त्र)

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ནོར་བུ་མ་མེ་བརྒྱ་ལྷན་ཁྱེད་ལ་འབར་བ་འབར་བ་ཆོས་
དབྱིངས་སྤྱིང་པོ་ནོར་བུ་ནོར་བུ་ནོར་བུ་ཆོན་པོའི་སྤྱིང་པོ་ནོར་བུ༥ ॥

གྲོལ་མ་གྲོལ་མ་གྲོལ་བར་གྱིས་བཅོམ་ལྷན་འདས་མ། བཅོངས་པ་གྲོལ༥ ॥

२५३

ॐ किणि किणि ।

तथागतोद्भवशान्ते वर ते उत्तमोत्तम तथागतोद्भव हूँ फट् ।

དེ་བཞིན་གསེགས་པ་འབྱུང་བ་ནི་བ་མཚོག་ཏྱོད་ལ་མཚོག་གི་མཚོག་དེ་བཞིན་གསེགས་པ་
འབྱུང་བ། །

འདི་ལྟ་སྟེ། རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བ་ཆེན་པོ་རྒྱལ་བ། རྒྱལ་བའི་སྒྲ་ལ། ཅོད་པ་ཅོད་པ། གྲི་མ་
 གྲི་མ། གཡོ་བ་གཡོ་བ། བདག་གི་ལས་ཀྱི་ཤྱིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་ཅིང་ཟད་
 པར། ཡེ་ཤེས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བསྐབས་པ་གནི་ཚུགས།

ནམ་མཁའ་ལྷ་སྒྲིབ་པ་དེ་སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ།

नमो भगवते सहस्रवर्ते सर्वबुद्धावलोकिते ।

བཙུམ་ལྷ་མོ་འདས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །སྒྲིབ་བསྐྱེད་སྐྱོ་བ་སྐྱེད་པ་ལྷ་སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ།

ཙཱུ་ཤོད་སྒྲིབ་པ་དེ་སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ།

चक्षु श्रोत्र घ्राण जिह्वा काय मनोविज्ञान विशोधनि स्वाहा ।

མིག་དང་ན་བ་དང་སྒྲིབ་དང་ཁྱེ་དང་ལུས་དང་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པར་སྒྲིབ་པ་ལོག་ཏེ།

ཕུར་ཕུར་སུར་སུར་ཕུར་ཕུར་ཕུར་ཕུར་སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ།

फुरु फुरु सुरु सुरु फुरा फुरा प्रफुरा प्रफुरा सर्वबुद्धाधिष्ठिते स्वाहा ।

སངས་རྒྱལ་མཁས་པ་ལྷ་སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ།

རྣམ་རྒྱུ་ལོག་ཏེ། ལྷ་སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ། སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ།

धर्मधातुगर्भे स्वाहा । अभाव स्वाहा । सर्वधर्मावबोधनि स्वाहा ।

ཆོས་དབྱིངས་སྒྲིབ་པ། དངོས་པོ་མེད་པ། ཆོས་མཁས་པ་ལྷ་སྐྱོ་བ་ལོག་ཏེ། ॥

ॐ ཕྱག་ཏུ་བཞུགས་པ། (वन्दनामन्त्र)

ཨོྃ་ནམ་མཁའ་ལྷ་སྐྱོ་བ། རྣམ་པར་སྐྱོ་བ། རྣམ་པར་སྐྱོ་བ་ལྷ་སྐྱོ་བ།

ॐ नमो मञ्जुश्रिये नमः सुश्रिये नम उत्तमश्रिये स्वाहा ।

འཇམ་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། ལེགས་པའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། མཆོག་གི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། ॥

(सर्वपापशमनीमन्त्र)

(त्रिरत्नाश्रयप्रदक्षिणामन्त्र)

ཡུག་འཆལ་བསྐྱོར་བ་ལེགས་པར་བསྐྱོར་བ་སྤྲིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྤྱོད་པ། ॥

ॐ क्वेण'पठक'पति'सृणुषा (वचनप्रभावकरीमन्त्र)

कर्म'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा

नमो भगवते उष्णीषाय धरे रं ते स्वाहा ।

पठक'पति'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा ॥

ॐ क्वेण'पठक'पति'सृणुषा (सर्वदुर्गतिपरिशोधनमन्त्र)

(सर्वदुर्गतिपरिशोधनमन्त्र)

ॐ क्वेण'पठक'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा'पति'सृणुषा

तद्यथा । ॐ शोधनि विशोधने मम सर्वपापविशोधने ।

पठक'पति'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा'पति'सृणुषा

पठक'पति'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा'पति'सृणुषा

शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मावरणविशुद्धे स्वाहा ॥

पठक'पति'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा'पति'सृणुषा ॥

ॐ क्वेण'पठक'पति'सृणुषा (भैषज्यदाने भैषज्याभिमन्त्रणमन्त्र)

(भैषज्यदाने भैषज्याभिमन्त्रणमन्त्र)

ॐ क्वेण'पठक'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा

तद्यथा । ॐ भैषज्ये भैषज्ये महाभैषज्ये भैषज्यराजसमुद्गते स्वाहा ।

पठक'पति'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा'पति'सृणुषा'कर्म'सृणुषा ॥

1. 'सृणुषा' - क.

ॐ ऋद्‌स्र्‌मस'उद्‌र'व'दु'वि'वर'पुद्‌प'रि'स्र्‌मस॥
(सर्वव्याधिप्रशमनीमन्त्र)

ॐ वद्‌वद्‌मद्‌वद्‌सद्‌पुद्‌दु'दु'दु'वद्‌र'स्र्‌मस॥

तद्यथा । वज्र वज्र महावज्र सर्वव्याधि हन हन वज्रण स्वाहा ।

ॐ वद्‌वद्‌मद्‌वद्‌सद्‌पुद्‌दु'दु'दु'वद्‌र'स्र्‌मस'उद्‌र'व'दु'वि'वर'पुद्‌प'रि'स्र्‌मस॥

सद्‌सद्‌मद्‌मद्‌सद्‌पुद्‌दु'दु'दु'वद्‌र'स्र्‌मस'उद्‌र'व'दु'वि'वर'पुद्‌प'रि'स्र्‌मस॥

सङ्घसपरिवारदानपतिसपरिवारस्य च सर्वव्याधि शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ वद्‌वद्‌मद्‌वद्‌सद्‌पुद्‌दु'दु'दु'वद्‌र'स्र्‌मस'उद्‌र'व'दु'वि'वर'पुद्‌प'रि'स्र्‌मस॥
ॐ वद्‌वद्‌मद्‌वद्‌सद्‌पुद्‌दु'दु'दु'वद्‌र'स्र्‌मस॥ ॥

ॐ ॐ'दु'दु'वद्‌वद्‌स'प'द'प'दु'मि'प'रि'स्र्‌मस॥
(अपरिमितगुणानुशंसामन्त्र)

ॐ ॐ'दु'दु'वद्‌वद्‌स'प'द'प'दु'मि'प'रि'स्र्‌मस॥

नमो रत्नत्रयाय ।

ॐ ॐ'दु'दु'वद्‌वद्‌स'प'द'प'दु'मि'प'रि'स्र्‌मस॥

ॐ ॐ'दु'दु'वद्‌वद्‌स'प'द'प'दु'मि'प'रि'स्र्‌मस॥

नमो भगवते अमिताभाय तथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।

ॐ ॐ'दु'दु'वद्‌वद्‌स'प'द'प'दु'मि'प'रि'स्र्‌मस॥
ॐ ॐ'दु'दु'वद्‌वद्‌स'प'द'प'दु'मि'प'रि'स्र्‌मस॥

१५५॥

तद्यथा ।

ॠ००॥

ॠ००॥

अमितोद्भव ।

ॠ००॥

ॠ००॥

अमितविक्रान्ते ।

ॠ००॥

ॠ००॥

गगनकीर्तिकरे ।

ॠ००॥

ॠ००॥

ॐ अमिते ।

ॠ००॥

ॠ००॥

अमितसम्भव ।

ॠ००॥

ॠ००॥

अमितगामिनि ।

ॠ००॥

ॠ००॥

सर्वक्लेशक्षयंकरि स्वाहा ।

ॠ००॥

ॠ००॥

ॠ००॥

(पूर्वासंगृहीत-धर्मचर्याप्रकाशकमन्त्र)

ॠ००॥

वज्रसमाजः ।

ॠ००॥

ॠ००॥

ॐ सर्वतथागत ।

ॠ००॥

| | | | |
|-------------|------------|------------|----------------|
| ཨྐྱ། | ཤྐྱ། | ཤྐྱ། | ཤྐྱ། |
| अर्घ । | पाद्यं । | पुष्पे । | धूपे । |
| མཚན་ཡན། | ཞབས་བསྐལ། | མེ་དྲག་མ། | བསྐྱལ་སྒྲོལ་མ། |
| ཨྐྱལྐ། | གཞྐ། | རྐྱེ་ཁྱིེ། | ཤྐྱེ་ཨྐྱེ། |
| आलोके । | गन्धे । | नैवेद्ये । | शब्द आः हूँ । |
| སྐྱང་གསལ་མ། | དྲི་ཆ་བ་མ། | ཞལ་བས་མ། | རྐྱལ་སྐྱལ་མ། ॥ |

༥ སྐྱུ་ཁྱུ་གསལ་བའི་སྐྱུ་གསལ་ནི། (कायस्नानमन्त्र)

ཨྐྱ་སྐྱ་དཔྱལ་དཔྱལ་ཨྐྱེ་ཨྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ་

ॐ सर्वतथागत अभिषेकत समयश्रिये हूँ ।

དེ་བཞིན་གཤམས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབང་བསྐྱར་བའི་དམ་ཆོག་དཔལ་གྱི་ཕྱིར་དུ། ॥

༥ རྐྱུ་སྐྱུ་གྱི་སྐྱུ་གསལ་ནི། (जलदानमन्त्र)

ཨྐྱ་མཆི་པལྱེ་སྐྱེ། ཨྐྱ་ཨྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ། ཨྐྱ་ཇལ་མི་དྲི་སྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ།

ॐ मणिपद्मे हूँ । ॐ आः ह्रीः हूँ । ॐ जलमिदं सर्वप्रेतेभ्यः स्वाहा ।

ཀྱི་ཕྱིར་བྱ་པལྱེ་ཅན།

རྐྱུ་ལྐྱེ་ཨྐྱེ་སྐྱེ་ཐམས་ཅད་ལ་ལྐྱེ་སྐྱེ་སྐྱེ། ॥

2. वुँ आँ जिँ खँ हुँ- सा० मा० (भा० २), पृ० ५६९.

ཨིད་ཕྱེལ་ཁྲ་ཁ་ཁྲུ་ཁྲུ།

इदम्बलिङ्ख ख खाहि खाहि ।

གཏོར་མ་འདི་ཟླ་ཟླ་ཟླ་ཟླ། ॥

༥ བདུད་ཅི་འབྱེལ་པའི་སྒྲགས།

(अमृतकुण्डलीमन्त्र)

ཨྲྀ་བཏྲ་ཨམྲིད་ཀུཏྲའི་ཏན་ཏན་རྒྱུ་ཡེ།

ॐ वज्र अमृतकुण्डलि हन हन हूँ फट् ।

དྷ་ཇྲ་བདུད་ཅི་འབྱེལ་བ་སྒྲན་སྒྲན། ॥

༥ མ་དག་པ་སྦྱང་བའི་སྒྲགས།

(अशुद्धशोधनमन्त्र)

ཨྲྀ་སྦྱུལ་བུཏྲུ་སའ་ཆུམྲུ་སྦྱུལ་བུཏྲུ་ཉྲྀ།

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम् ।

རང་བཞིན་དག་པའི་ཚས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་དག་པའོ། ॥

༥ མི་གཡོ་བའི་གཏོར་སྒྲགས།

(अचलबलिमन्त्र)

ཞུར་ཨཅལ་སཔ་རིལྲ་ཨིདྲི་བའི་ཁྲ་ཁ་ཁྲུ་ཁྲུ།

आर्य अचल सपरिवार इदं बलिङ्ख ख खाहि ।

འཕགས་པ་མི་གཡོ་བ་འཁོར་དང་བཅས་པ་གཏོར་མ་འདི་ཟླ་ཟླ་ཟླ་ཟླ། ॥

ॐ क्षीर'मरि'गर्जर'म'र'सु'र'म'रि'सृ'ग' (ताराबल्यर्पणमन्त्र)

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

अप्रतिहतशासनानाम् ।

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

अप्रतिहतशासनानाम् ।

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् । सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् । सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

हे हे भगवते ।

महासत्त्वसर्वबुद्ध-अवलोकिते ।

हे हे भगवते ।

महासत्त्वसर्वबुद्ध-अवलोकिते ।

गुरु'गुरु'सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् । सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् । सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

मा विलम्ब ।

मा विलम्ब ।

इदम्बलिङ्गगृहापय गृहापय हूँ हूँ ।

मा विलम्ब ।

मा विलम्ब ।

इदम्बलिङ्गगृहापय गृहापय हूँ हूँ ।

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

गुरु'गुरु'सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

सर्व'बुद्ध'बोधिसत्त्वानाम् ।

ॐ क्षीर'मरि'गर्जर'म'र'सु'र'म'रि'सृ'ग' (नागबलिमन्त्र)

ॐ वज्रयक्ष हूँ ।

ॐ वज्रयक्ष हूँ ।

ॐ वज्रयक्ष हूँ ।

ॐ वज्रं ज्वालामलं हन दह पच मथ भञ्जय हूँ फट् ।

ॐ वज्रं ज्वालामलं हन दह पच मथ भञ्जय हूँ फट् ।

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ अकारो मुखं सर्वधर्माणां आद्यनुत्पन्नत्वात् । ॐ आः हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ वतलि वतलि महावतलि हूँ हूँ जः जः स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ आगच्छागच्छ महानाग-अधिपतये सर्व भुभुवः फुँ फु स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

महानाग-अधिपतये गृहेदं अर्घम् । ॐ हिलि हिलि महाहिलि फुँ फुँ स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ भक्षय भक्षय समय तिष्ठ फुँ फु हूँ स्वाहा । ॐ नाग-अधिपति सपरिवार गच्छ ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ཨྲི་ག་རུ་ཏྲི་ས་ཏྲི་ཙའི་ཙའི་སྒྲུ།

ॐ गरुड हंस हे चले चले स्वाहा ।

ནམ་མཁའ་ཁྱིང་གི་རྒྱལ་པོ་གཡོ་བ་གཡོ་བ། ॥

॥ སུརུ་པའི་ཐུགས་ནི། (सुरूपमन्त्र)

ནམ་མཁའ་སུརུ་པའི་ཐུགས་ནི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུབ་པའི་སྒྲུབ་པ།

नमः सुरूपाय तथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དག་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་ཐོགས་པའི་སངས་རྒྱལ་གཞུགས་མཛེས་ལ་
ཕུག་འཆལ་ལོ།

ཏུཐ། ཨྲི་སུརུ་སུརུ།

པ་སུརུ་པ་སུརུ།

तद्यथा । ॐ सुरु सुरु ।

प्रसुरु प्रसुरु ।

འདི་ལྟ་སྟེ། གཞུགས་མཛེས་གཞུགས་མཛེས།

རབ་དུ་གཞུགས་མཛེས་རབ་དུ་གཞུགས་
མཛེས།

ཏར་ཏར། ཧར་ཧར།

སྒྲུར་སྒྲུར།

तर तर । भर भर ।

सम्भर सम्भर ।

ཐྱོལ་ཐྱོལ། རྒྱལ་པ་རྒྱལ་པ།

ཡང་དག་པར་རྒྱལ་པ་ཡང་དག་པར་
རྒྱལ་པ།

སྒྲུར་སྒྲུར། སྒྲུཔ་ལ་སྒྲུཔ་ལ།

སའ་ཤིངྱེ་ཏྲི་སྒྲུ།

स्मर स्मर । सन्तर्पय सन्तर्पय ।

सर्वप्रेतानां स्वाहा ।

བླ་པ་བླ་པ། ཀུན་དུ་ཆེམ་པར་གྱིས་
ཀུན་དུ་ཆེམ་པར་གྱིས།

ཡི་དུགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ལ་ལིགས་
པ་སྒྱིན།

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ན་གནས་པའི་ཡི་དྲུགས་རྣམས་ལ་བདག་བཟའ་བ་འདི་སྟེར་
གྱི། སྐགས་ལྟ་པ་རྣམས་ཕྱིར་དེངས་ཤིག། ༥

(अग्रपूजार्पणमन्त्र)

ལྷ་མ་དོ་རྗེའི་ཞལ་བཅ།

སངས་རྒྱལ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་དོ་མྱོང་ཞལ་ཟེ།

འདོད་ལྷན་དགྱིལ་འཁོར་རྩི་རྩི་ཞལ་བཅས།

དཔལ་ལྷན་ཆོས་རྒྱུད་པ་རྣམས་ཀྱི་ཁལ་ནས། །

ॐ कट'सुति'सृगसा (पिण्डमन्त्र)

ॐ कट'सुति'सृगसा

ॐ हरिते स्वाहा ।

ॐ कट'सुति'सृगसा

ॐ कट'सुति'सृगसा

ॐ हरिते महावज्रयक्षिणि हर हर सर्वपापं मक्षिं स्वाहा ।

ॐ कट'सुति'सृगसा

ॐ कट'सुति'सृगसा

ॐ अग्रपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा ।

ॐ कट'सुति'सृगसा

ॐ कट'सुति'सृगसा

ॐ उच्छिष्टपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा ।

ॐ कट'सुति'सृगसा ॥

ॐ सुत'व'क'स'ति'सृगसा

(शोधनधर्मताविशुद्धिमन्त्र)

ॐ सुत'व'क'स'ति'सृगसा

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम् ।

ॐ सुत'व'क'स'ति'सृगसा ॥

ཡང་དག་པར་སྒྱུས་པ་ཡང་དག་པར་སྒྱུས་པ། །

ཨྱིང་པོ་རྒྱ་རྒྱལ་ལ། །

གཟའི་དབང་ཕྱག་རབ་ཏུ་འཛེམས་པ་དམ་ཆིག་ཆེན་པོ་གཞི་ཚུགས། ॥

དབང་ལྷན་ལ།

ཨྐྱ་བྲམྱཏི་སྐྱུ་རྒྱུ།

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।

ཆངས་པ་ལ།

ཨྐྱ་སུ[སུ]ལྷཡ་སྐྱུ་རྒྱུ།

ॐ सूर्याय स्वाहा ।

ཉི་མ་ལ།

ཨྐྱ་ཅནྱཡ་སྐྱུ་རྒྱུ།

ॐ चन्द्राय स्वाहा ।

ཟླ་པ་ལ།

ཨྐྱ་པྱི་པྱི་པྱི་རྒྱུ་སྐྱུ་རྒྱུ།

ॐ पृथिवीभ्यः स्वाहा ।

སའི་ལྷ་མ་ལ།

ཨྐྱ་རྒྱལ་རྒྱུ་སྐྱུ་རྒྱུ།

ॐ नागेभ्यः स्वाहा ।

གླ་རྒྱམས་ལ།

ཨྐྱ་ཨ་སུ་རྒྱུ་སྐྱུ་རྒྱུ།

ॐ असुरेभ्यः स्वाहा ।

ལྷ་མ་ཡིན་རྒྱམས་ལ་ལེགས་པ་སྐྱིན།

ནམསྐུའ་དྲུག་དེ་རྒྱུ་བི་བྲ་སྐྱལ་རྒྱུ།

नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

དེ་བཞིན་གསེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྒྲོ་སྒྲ་ཆོགས་ནས་ཕུག་འཆལ་ལོ།

སའཐ་པྱ་ཁྱི་ཨྐྱ་རྒྱུ་སྐྱུ་རྒྱུ་སྐྱུ་རྒྱུ།

सर्वथा खं उद्गते स्फरण इमं गगन खं ।

རྒྱམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་རྒྱམ་མཁར་འཕགས་ཤིང་བྱབ་པ་འདི་རྒྱམ་ཁའི་དབྱིངས་སུ།

གྱི་རྒྱུ་དཔྱུ་དྲི་སྐྱུ་རྒྱུ།

गृह्णेदम्बल्यादि स्वाहा ।

གཏོར་མ་ལ་སྐགས་པ་འདི་བཟུང་། ॥

ལྷ་སྐུ་ལོན་སྤྱན་སྤྱན་པོ་རྩི་བ་ལྷ་མ་ཡིན་ནམ་མཁའ་ཁྲིང་མི་འམ་ཅི་ལྟོ་འཕྲུ་ཆེན་པོ་མི་དང་མི
མ་ཡིན་ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན་པ་སྐྱ་པ་སྐྱ་ལ་ཁྱོད། འདྲོད་པ། ॥

ॐ འཕྱུང་པོར་གྱི་ཡལ་མ། (भूतबलिमन्त्र)

ॐ गुङ्करि गुङ्करि स्वाहा ।

ཨོྃ་གུད་གུད་སྒྲུལ།

ॐ गुड् गुड् स्वाहा ।

སའ་པོ་པིལ་ལྷ་མོ།

सर्वविघ्नन् ।

བཤེགས་སྒྲུབ་ཅད།

ଐଁ ପିଟି ପିଟି ସ୍ବରା

ओं पिचि पिचि स्वाहा ।

ཨོ་གྲིཛུང་།

ॐ गृहेदं ।

འདི་བཟུང་།

ཨོཾ་སྐུ་ཐུང་པ་མཆོ།

सर्वभूत गच्छ ।

འབྲུང་¹བ་ཐམས་ཅད་སྔོང་༥ ༥

མདྲ་དེ། རྟེན་གྱི། རྟེན་ལྟེ།
महातेज । निरकूले । निरिवणे ।

གཟི་བཞིན་ཆེན་པོ། རིགས་བྲལ་མ།

སའ་བྱུང་ཨཱཱིླཱ་ཨཱཱིླཱ་ཏེ་སྐྱུ།
सर्वबुद्ध-अधिष्ठान-अधिष्ठिते स्वाहा ।

སངས་རྒྱལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྱིན་གྱིས་བསྐྱབས་ཀྱིས་བྱིན་བསྐྱབས་མ།

ནམས་མཆོད་བྱུང་ནྟེ། རྟོ་བཟླ་ཞུཡུའི་སྐྱུ།
नमस्समन्तबुद्धानाम् । ॐ वज्रायुषे स्वाहा ।

ཀུན་ནས་སངས་རྒྱལ་ནམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།། རྟོ་མེད་ཆེ་ལ་གཞི་ཚུགས།

རྟོ་བཟླ་[རྒྱལ་]་སྐྱུ། རྟོ་བཟླ་ཞུརྒྱལ་སྐྱུ།
ॐ वसुधाय स्वाहा । ॐ वज्रोद्भावाय स्वाहा ।

རྟོ་འཛིན་གཞི་ཚུགས། རྟོ་མེད་བྱང་བ་ལ་གཞི་ཚུགས།

རྟོ་ཨེ་ཤེ་བེ་ཤེ་སྐྱུ། རྟོ་བཟླ་རྒྱུ་གཞི་སྐྱུ།
ॐ अरजे विरजे स्वाहा । ॐ वज्रधातुगर्भे स्वाहा ।

རྒྱལ་མེད་རྒྱལ་བྲལ་མ། རྟོ་མེད་བྱིངས་ཀྱི་སྤང་པོ་མ།

ॐ वज्रमुद्गरे अकोटय अकोटय हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ सुप्रतिष्ठ वज्र स्वाहा ।

ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་སྤྱང་པོ་མ།

ཨོྃ་སཌ་ཏྲུག་ཏྲ་རྒྱལ་མཁུ་སྤྱུལ་བཟླ་སྤྲུང་སམལ་སྒྲི།

ॐ सर्वतथागतधर्मकायमहासुखवज्रसुरतसमयस्त्वम् ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚེས་སྤྱི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་དོན་ཤིན་ཏུ་དགའ་བའི་དམ་ཆེག་
ཁྱོད།

ཨོྃ་སཌ་ཏྲུག་ཏྲ་སྒྲོག་ཀྱལ་སམལ་སྒྲི།

ॐ सर्वतथागतसम्भोगकायसमयस्त्वम् ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལོངས་སྤྱོད་ཐོགས་སྤྱི་དམ་ཆེག་ཁྱོད།

ཨོྃ་སཌ་ཏྲུག་ཏྲ་རྒྱུ་ཅ་ཀྱལ་སམལ་སྒྲི།

ॐ सर्वतथागतनिर्माणकायसमयस्त्वम् ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱལ་པའི་སྤྱི་དམ་ཆེག་ཁྱོད།

ཨོྃ་བཟླ་སྤྲུང་ཀྱལ་སྤྲུང་ཀྱལ་སྤྲུང་།

ॐ वज्रप्रमर्दनाय प्रमर्दनाय स्वाहा ।

དོན་ཤིན་ཏུ་འཛོམས་པ་ལ་རབ་ཏུ་འཛོམས་པའི་ཕྱིར་གཞི་རྒྱུགས།

ཨོྃ་ཨུཾ་བུཌྱུ་ཀྱི་ཏྲ་ཏྲུ་པཎྜ།

ॐ आः विघ्नान्तकृत् हूँ फट् ।

བགེགས་མཐར་ཐུང།

ཨོྃ་སཌ་ཏྲུག་ཏྲ་ཨ་མྲི་ཤི་ཀྱལ་སམལ་བྱེལ་སྒྲི།

ॐ सर्वतथागत-अभिषेकतसमयश्रिये हूँ ।

ॐ हूँ त्राँ ह्रीः आ कायविशोधनि स्वाहा ।

ॐ चक्षु चक्षु समन्तचक्षु विशोधनि स्वाहा ।

ॐ हूँ ह्रीः भु खं वज्री भव दृढ तिष्ठ भु खं स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते पुष्पकेतुराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय ।

མེ་དོག་མ་མེ་དོག་མ་གཞི་རྒྱལ་ས།

ཕུའི་ཨམ་ཀ་རི་ཅི་སྐྱུ་རྒྱུ།

पुष्प-अवकरिणे स्वाहा ।

མེ་དོག་ཀན་བྱེད་མ་གཞི་ཚུགས།

ॐ सर्वतथागत इदं गुरुबुद्धधर्मसङ्घबोधिसत्त्वमण्डलकं निर्यातयामि ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་སྤྲོ་མ་སངས་རྒྱས་ཆོས་དགེ་འདུན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་
དཀྱིལ་འཁོར་བ་ལ་འདི་འབྲུལ་བར་བགྱེའོ། །

ॐ ཨཱུཾ་པོ་འི་སྤྲལ་ས་ནི། (महाकालमन्त्र)

ॐ महाकालाय । शासनोपकारिणे । एष अपश्चिमकालोऽयम् ।

ཡིད་རྩལ་འཕྲུལ་ཡེལ་གྱི་ཁྱོ་ཡོད་པའི་པུ་ཏི་ལྷ་ [པུ་ཏི་ལྷ་] ལྷ་ར་མི་དང་ཡིམ་དུ་ཁྱོ་ བ་ལ།

इदं (?) रत्नत्रयाय अपकारिणं यदि प्रतिज्ञां स्मरसि तदा इमं दुष्टं ख ख ।

འདིར་དགོན་ཅིག་གསུམ་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པ་གལ་ཏེ་འབྱུང་ན་དམ་བཅའ་དྲན་པར་བྱིས་ལ་
དེའི་ཆེ་གདག་པ་ཅན་འདི་ཟོ་ཟོ།

१५५. १५५।

गृह गृह ।

॥५॥

1. सुपुष्टि- ख.

॥ ह्रीं क्लीं श्रृंगार्यै नमः ॥ (देवी[महाकाली]मन्त्र)

॥ वद्धं वदं हिंसा वत्तम् । (परिणामनाशलोक)

गुह्यकुमैत्रेयः सप्तं प्रहस्य विष्णु उवाच ॥
 कुर्वन्तु मैत्रीं सततं प्रजासु दिवा च रात्रौ च चरन्तु धर्मम् ॥
 श्रेष्ठं कथयामास ह्यनुप्रास्य सुदठि । शिव दत्त मकरन्दोक्तं त्वं पश्य मे ॥

1. पद्मसि- ख.
2. दिवैशेकस्मृत्यङ्कुङ्कुपत्पत् - सा० मा० (भा० २), पृ० ५८५.

